न्द मातरम्

ove My India

के. के. सिंह 'मयंक'

वन्दे मातरम्

रचयिता

के.के. सिंह 'मयंक'

सङ्कलन

श्रीमती सरोज 'मयंक'

प्रकाशक

ऐवाने-ख़्वाब

कमला नगर, आगरा-४

किताब का नाम - वन्दे मातरम्

रचयिता - कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'

प्रकाशन का वर्ष - १९९८

प्रतियाँ - १५००

मूल्य - जनता संस्करण - १०० रु.
पुस्तकालय संस्करण - २५० रु.

(सभी अधिकार रचयिता के पास सुरक्षित हैं)

वितरक
श्रीमती सरोज 'मयंक'
बी. एच. -१९३ एच. आई. जी.
केदार नगर, शाहगंज, आगरा

पुस्तक प्राप्ति के पते :
१. 'ऐवाने ख़्वाब' कमला नगर आगरा-१
२. बी. एच. -१९३ एच. आई. जी. केदार नगर, शाहगंज, आगरा

समर्पण

स्वर्गीय श्री कुँवर लाल जी जैन (सुराना)
को
सादर
समर्पित

आत्मकथ्य

देश पर बलिदान हो जाने वाले शहीदों और देश के प्रति मेरी भावनाओं की अभिव्यक्ति मेरे बारहवें संग्रह **'वन्दे मातरम्'** के रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत है ।

देश को आज़ादी अपार संघर्षों तथा बलिदानों के बाद प्राप्त हुई थी । प्रत्येक भारतवासी का यह कर्त्तव्य है कि वह इन शहीदों के प्रति कृतज्ञ रहे और श्रद्धा से स्मरण करे । जब-जब भी मेरे हृदय में इन शहीदों के प्रति कृतज्ञता तथा सम्मान के भाव जागृत हुए तब-तब मैंने विभिन्न शहीदों पर रचनाएँ लिखी हैं । मेरे इस संग्रह में एक-एक स्वातंत्रय वीर पर एक से अधिक रचनाएँ हैं, मैं समझता हूँ कि इन शहीदों का बार-बार स्मरण ही कदाचित इसका कारण है ।

मैंने इस संग्रह में यदि एक ओर भारत का प्रशस्तिगान किया है तो दूसरी ओर भारत की वर्तमान दशा का भी चित्रण किया है । सत्य तो यह है कि भारत में आज भी किसी चीज की कमी नहीं है । प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर इस देश में मनुष्यों के नैतिकपतन के कारण ही वर्तमान संकट पूर्ण स्थिति दृष्टिगत होती है । ऐसे में कवि शाइरों का यह कर्त्तव्य है कि वे ऐसी रचनाएँ रचें जिसे पढ़कर देश वासियों में चरित्र-निर्माण की भावना जागृत हो, देश पर प्राण उत्सर्ग कर देने वाले शहीदों के प्रति सम्मान पैदा हो और नई पीढ़ी भी देश पर सर्वस्व निछावर कर देने की भावना से ओत-प्रोत हो जाए । इस सम्बन्ध में मेरा प्रयास **'वन्दे मातरम्'** के रूप में आप पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है ।

मेरे इस संग्रह के प्रकाशन में मेरे अनेक आत्मीय बन्धुओं ने सहयोग दिया है जिनमें जनाब **'ख़्वाब'** अकबराबादी, श्रीमती सरोज सिंह, श्री अशोक जैन (ओसवाल एम्पोरियम), सरदार अमर देव सिंह, श्री राम सिंह, श्री बी. के. गुप्ता, सरदार पम्मी सिंह तथा श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

अन्त में शुभकामनाओं के साथ यह निवेदन है कि संकलन के विषय में पाठकों की बहुमूल्य राय की मुझे प्रतीक्षा रहेगी ।

के. के. सिंह 'मयंक'
मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक
मध्य रेलवे, आगरा
निवास-H.I.G.-5 न्यू शाहगंज , आगरा

मयंक : फ़न और शख़्सियत

के. के. सिंह 'मयंक' अकबराबादी की अब तक कुल १२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। १२ पुस्तकों का प्रकाशन मयंक साहब के दीर्घकालीन साहित्यिक जीवन की पुष्टि करता है। एक लम्बे समय से **'मयंक' साहब** हिन्दी तथा उर्दू अदब की ख़िदमत करते आ रहे हैं।

शंकर-शम्भू, अज़ीज़नाज़ाँ, रामकुमार, शंकर, नईम-शमीम अजमेरी, सईद-जयपुरी, अख़्तर आज़ाद, अहमद हुसैन मुहम्मद हुसैन, एम. एल. नकरा, इदरीस निज़ामी, सुधीर नारायण नीना महता- राजेन्द्र महता जगब हनीफ़ आगरा वाले आदि ग़ज़ल गायकों एवं क़व्वालों ने महफिलों, दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि पर मयंक साहब का कलाम समय-समय पर पेश किया है।

मयंक साहब ने फिल्मों एवं टी. वी. सीरियलों के लिए गीत भी लिखे हैं। मयंक द्वारा **लहू के फूल** नामक टी. वी. सीरियल के लिए लिखित शीर्षक गीत को बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई।

कन्नड़ भाषा में ग़ज़लों का अनुवाद एवं रूपान्तर **'उर्दू काव्यश्री'** नामक कन्नड़ पुस्तक द्वारा प्रकाशित हुआ है।

विभिन्न हिन्दी ग़ज़ल संकलनों **'ग़ज़ल से ग़ज़ल तक'** तथा **'अंजुरी भर ग़ज़लें'** में भी ग़ज़लें प्रकाशित हुई हैं।

इण्डो-अमेरिकन वर्ल्ड हूज़ हू, रेफ़रेंस एशिया एवं **बायोग्राफी इंटरनेशनल** जैसी पुस्तकें जिनमें विश्व के प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवनियाँ हैं, इनमें **मयंक साहब** की भी जीवनी एवं उपलब्धियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

मयंक साहब ने अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों एवं मुशाइरों में तरन्नुम के शाइर एवं कवि की हैसियत से बहुत ख्याति पाई है।

शाइर की हैसियत से मयंक साहब **आकाशवाणी** एवं **दूरदर्शन** से मान्यता प्राप्त शाइर हैं, तथा कोई भी गायक आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से उनका कलाम गा सकता है।

मयंक साहब ने जीवन के हर पहलू पर ग़ज़लें, गीत और नज़्में लिखी हैं। उनकी रचनाएँ जनसाधारण को पसन्द आती हैं।

मयंक के राष्ट्रीय एकता एवं देश प्रेम की भावनाओं से ओत-प्रोत कलाम बहुत सराहे गए हैं।

मयंक साहब देश के एक मात्र शाइर हैं जिनकी इस्लाम से सम्बन्धित हम्द, नात, सलाम, मनक़बत आदि की पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। आपके कलाम एच. एम. वी. के रिकार्ड्स व कैसेट्स के इलावा, वैस्टन, वीनस आदि कम्पनियों के कैसेट्स पर भी उपलब्ध हैं।

हिन्दी व उर्दू के अख़बारों, पत्रिकाओं एवम् रिसालों में आपकी ग़ज़लें अक्सर छपती रहती हैं। दूरदर्शन एवम् आकाशवाणी से आपकी रचनाएँ प्रसारित होती रहती हैं। मयंक साहब को १९९५ तथा १९९७ का **जिगर एवार्ड** प्राप्त हो चुका है। सन्१९९६ में **काव्य शिरोमणि** तथा **रसखान** पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। मयंक साहब बम्बई की संस्था **अदबी लहरें** तथा आगरा की संस्था **ग़ज़ल** के संस्थापक तथा अध्यक्ष हैं।

आज जबकि नई पीढ़ी ने देश पर प्राण बलिदान कर देने वाले शहीदों को लगभग भुला दिया है तथा जनता में देशभक्ति की भावना में काफ़ी कमी आ गई है, ऐसे में कवि शाइरों का यह प्रथम कर्त्तव्य है कि वे ऐसी रचनाएँ करें जो नई पीढ़ी में देश प्रेम की भावना जागृत कर सकें जो भटकती युवापीढ़ी को मार्गदर्शन दे सकें, जो भारत के अमर शहीदों के बलिदान का गौरवशाली स्मरण करवा सकें......। ख़ुशी की बात है कि इस आवश्यकता को पूर्ण करते हुए **मयंक साहब** ने अपनी देशभक्ति पूर्ण रचनाओं का यह संग्रह प्रकाशित किया है। मयंक साहब उन इने गिने कवियो में हैं जिन्होने केवल राष्ट्र भक्ति पूर्ण गीतों तथा रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत किया है।

मयंक साहब की भाषा ना तो अरबी फारसी शब्दों से भरी उर्दू है और न संस्कृत के क्लिष्ट शब्दों वाली हिन्दी है, बल्कि मयंक साहब की भाषा आम बोलचाल की भाषा है जो सभी की समझ में सरलता से आती है।इसके इलावा मयंक साहब की रचनाओं में फन्नी खामियाँ (छन्द दोष, भाषा दोष, कथ्य दोष आदि) प्रायः नहीं मिलतीं।

प्रस्तुत संग्रह में जहाँ एक और **सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, सरदार पटेल, महात्मा गाँधी** जैसे महान देशभक्तों पर कविताएँ हैं तो वहीं दूसरी ओर देश की वर्तमान स्थिति को रेखांकित करती हुई रचनाएँ भी हैं। **'मयंक' साहब** अपनी रचनाओं के माध्यम से समस्याओं को सिर्फ़ उठाते ही नहीं बल्कि उनका निदान भी प्रस्तुत करते हैं:

भारत को गर टुकड़े होने से बचाना है

देश की आज़ादी को यदि अमर बनाना है

उच्चवर्ग के लोगो कों इतना समझाना है

कुछ स्वार्थों को कर देना कुर्बान चाहिए

देश में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता तथा अशान्ति को देखकर **मयंक साहब** का कवि हृदय कह उठता है:

गौतम ख्वाजा की धरती का अम्न का एक निशान नहीं

ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं !

हिन्दु मुस्लिम सिक्ख तो मिलतें, पर मिलता इन्सान नहीं

ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं !

कवि शाइर की मनोस्थिति का चित्रण उसकी रचनाएँ होती हैं। एक 'मनोस्थिति' देश की दुर्दशा से क्षुब्ध हो कर उपर्युक्त रचना की जन्मदात्री है तो एक 'मनोस्थिति' इसके ठीक विपरीत स्थिति का चित्रण अग्रवत करती है:

तेरी झीलों में चाहत की गहराइयाँ
तेरे पर्वत मुहब्बत की ऊँचाइयाँ
तेरे झरनों में सरगम की रानाइयाँ
तुझसे बढ़के ज़माने में जन्नत कहाँ ?
मेरे हिन्दोस्ताँ मेरे हिन्दोस्ताँ !

फिर भी अधिकांश रचनाओं में देश की वर्तमान स्थिति (दुर्दशा) को बदलने का स्वर गुञ्जायमान है:

गुलशन को गुलज़ार बनाना ही होगा
तूफ़ानों से इसे बचाना ही होगा !

और तूफ़ान से बचाने का तरीक़ा मयंक साहब ये बताते हैं कि:

यही है वक़्त की आवाज़ आओ एक हो जाओ
मुहब्बत प्यार के तुम गीत गाओ एक हो जाओ !

ईश्वर मयंक साहब की इच्छा पूर्ण करे।

प्रकाशक

विषय सूची

क्रम शीर्षक	पृष्ठ संज्ञा
१.वन्दे मातरम्	१
२.आओ इसको नमन करें	२
३.ज्ञान की गंगा बहे	४
४.शान है	६
५.नमन के लिए	७
६.जवाहर लाल	८
७.हिन्दी को अपनाओ	९
८.तिरंगा झंडा	१०
९.शत-शत नमन	११
१०.नमन	१२
११.चन्दन है	१३
१२.प्यारा वतन	१४
१३.हिन्दुस्तान लिख देना	१५
१४.भारत देश महान	१६
१५.कदम बढ़ाता चल	१८
१६.अमर बनाना होगा	१९
१७.बापू	२०
१८.मेरा सलाम	२१
१९.मेहनतकश इंसान	२२
२०.सपनों वाला हिन्दुस्तान	२४
२१.भीमराव अम्बेडकर	२३
२२.नई चेतना	२७
२३.ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं	२८
२४.ये अर्ज़ है इस दिवाने की	२९
२५.जलने न देंगे हम	३०
२६.मेरा वतन	३१
२७.कथन है	३३
२८.वन्दे मातरम्	३४
२९.गणतन्त्र मनाएँ	३५
३०.मेरे हिन्दोस्ताँ	३६
३१.हिन्दुस्तान चाहिए	३७
३२.ऐ वतन	३८
३३.ईमान होना चाहिए	४०
३४.एक हो जाओ	४१
३५.ऐसी क्या मजबूरी है	४२
३६.ज़िन्दगी के लिए	४३
३७.हिन्द के सैनानी	४४
३८.शहीदों को नमन	४५
३९.हसीं है	४७
४०.स्वर्ण जयन्ती वर्ष	४८
४१.सपनों वाला हिन्दुस्तान	४९
४२.मादरे वतन	५०
४३.शाने वतन	५२
४४.वतन की शान	५३
४५.जीवन भर चलना है	५४
४६.फूल खिलाना ही होगा	५५
४७.वफ़ा देंगे	५६
४८.मंज़र है	५७
४९.नहीं लगता	५८
५०.हिन्दी भाषा	५९
५१.मुबारक हो	६०
५२.गुनगुनाओ तुम	६१

क्रम शीर्षक	पृष्ठ संख्या
५३. एक है हिन्दोस्ताँ	६२
५४. अमर रहे गणतंत्र	६३
५५. लख्ते जिगर बापू	६४
५६. अज़ीज़ वतन	६५
५७. भारत के निशाँ	६६
५८. हमारा नारा अखण्ड भारत	६७
५९. सच्चा हिन्दुस्तानी	६८
६०. इन्सान का मंदिर	६९
६१. आह्वान	७०
६२. मेरा दिल कुर्बान	७१
६३. सुमन चढ़ाएँ	७३
६४. वतन-जाँ से प्यारा	७५
६५. वृक्षा रोपण	७६
६६. हिन्द का बाँकपन	७८
६७. मेरा दिल कुर्बान	७९
६८. कश्मीर	८०
६९. श्रद्धा सुमन	८१
७०. मादरे हिन्द तुझको सलाम	८२
७१. मेरा हिन्दोस्ताँ	८३
७२. भारत का बंगाल	८४
७३. हिमाला	८५
७४. वतन की राह	८६
७५. हिन्द ही रहमान है	८७
७६. प्रियदर्शनी	८८
७७. गौतम बुद्ध	८९

क्रम शीर्षक	पृष्ठ संख्या
७८. मेरा भारत देश	९१
७९. महावीर भगवान	९२
८०. केरल	९३
८१. गुरु नानक देव	९४
८२. ज़िन्दगी है	९६
८३. आवाज़ है	९७
८४. बसा है तू	९८
८५. वतन प्यारे	९९
८६. हिन्दोस्ताँ है	१००
८७. उत्तम नारा है	१०१
८८. हिन्दोस्ताँ	१०२
८९. वीर सुभाष	१०३
९०. पञ्जाब हमारा	१०४
९१. राजस्थान	१०६
९२. न्यारा भारतवर्ष	१०८
९३. हिन्दुस्ताँ	११०
९४. वतन के लिए	१११
९५. चन्दन है	११२
९६. कोई वतन	११३
९७. मध्य प्रदेश	११४
९८. तिरंगा प्यारा	११५
९९. नेताजी	११६
१००. हिन्द को सजाएँगे	११७
१०१. रहता है	११८

वन्दे मातरम्

हाथ में लेके गाएँगे हम भारत का परचम
वंदे मातरम्

अमर शहीदों ने जब फाँसी का फंदा चूमा था
यही मनोहर गीत सभी के होंटों पर झूमा था
हम भी यहीं गाएँगे हरदम जब तक है ये दम
वंदे मातरम्

भक्ति भाव श्रद्धा से पूरित पावन गीत हमारा
शब्द शब्द से बहती इसके जैसे अमृतधारा
छंद-छंद में बसी है जिसके जीवन की सरगम
वंदे मातरम्

भजन, सबद और आयत से भी पावन गीत हमारा
जिसको गा गाकर फहराते सभी तिरंगा प्यारा
इसको गाकर भारत माँ की पूजा करते हम
वंदे मातरम्

इसको गाकर दिया गया था इन्क़लाब का नारा
दीवानों ने कहा ग़ुलामी हमको नहीं गवारा
भारत माँ के घावों पर जो बन के लगा महरम
वंदे मातरम्

हिन्दु मुस्लिम सिक्ख इसाई जब मिलजुल कर गाते
भारत माता की वेदी पर फूल देव बरसाते
झूम उठता है जिसको गाकर ये सारा आलम
वंद मातरम्

आओ इसको नमन करें

सारी दुनिया से बढ़कर है ऊँची इसकी शान
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।

हर मज़हब के लोग यहाँ पर मिलजुल कर रहते हैं,
मिलजुल कर हँसते गाते हैं, मिलकर गम सहते हैं
जहाँ बाइबिल, गीता, कुरआँ सब पाते सम्मान
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।

उत्तर में हिमगिरि सा मोती इसके मुकुट जड़ा है,
हिन्द महासागर दक्षिण में जिसके चरण पड़ा है
जिसकी रक्षा करे हिमालय बन करके दरबान
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान
आओ इसको नमन करें।

हम सब की रक्षा करते मौलिक अधिकार हमारे,
सब स्वतन्त्र हैं इस धरती पे जैसे चाँद सितारे
है अखण्ड गणतंत्र हमारा जिसका एक विधान
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान
आओ इसको नमन करें।

ये वसुधा है कुटुम्ब एक अपना विश्वास यही है,
सब को इसने अपनाया कहता इतिहास यही है
सत्य अहिंसा देश प्रेम है जिसके लक्ष्य महान
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान
आओ इसको नमन करें।

यहाँ सिक्ख-हिन्दू मजार पै जाकर शीश झुकाते,
मुस्लिम और ईसाई दीवाली का पर्व मनाते
सबके होंटों पर रहती है जहाँ मधुर मुस्कान
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान
आओ इसको नमन करें।

त्यागेंगे इंग्लिश भाषा को है अपना मंसूबा,
हिन्दी भाषा बहन हमारी, उर्दू है महबूबा
सारी देशी भाषाओं का, करते हैं सम्मान
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान
आओ इसको नमन करें।

जिसकी खातिर बापू ने थी हँसकर गोली खाई
भगत, चन्द्रशेखर, सुभाष ने अपनी जान गँवाई
इसकी खातिर किया असंख्यों ने हँसकर बलिदान,
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान
आओ इसको नमन करें।

भिन्न-भिन्न हैं रहन-सहन और भिन्न-भिन्न भाषाएँ,
मगर एक हो करके हम सब इसको शीश झुकाएँ
समझा जाता यहाँ एकता को जीवन का प्राण
ये है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान
आओ इसको नमन करें।

ज्ञान की गंगा बहे

कोई भी अनपढ़ न दुनिया में रहे
हर तरफ बस ज्ञान की गंगा बहे।

साक्षरों की तो निराली शान है
सबसे बढ़के धन जहाँ में ज्ञान है
ज्ञान सच्चा धर्म और ईमान है
जो निरक्षर है बड़ा नादान है
रहके अनपढ़ फिर भला संसार में
क्यों कोई अपमान दुनिया के सहे
हर तरफ बस ज्ञान की गंगा बहे।

इस कहावत को न समझे क्यों कोई
जानवर है हर निरक्षर आदमी
लिखने पढ़ने से सँवरती जिन्दगी
मन के अँधियारे में होती रौशनी
छोड़ कर फिर ज्ञान की राहें यहाँ
क्यों भला अज्ञान की बाँहें गहे
हर तरफ बस ज्ञान की गंगा बहे।

आज अक्षर का सभी को ज्ञान हो
दिल में शिक्षा प्राप्ति का अरमान हो
अब न अनपढ़ कोई भी इंसान हो
हों सभी साक्षर सफल अभियान हो
हम मिटाएँगे अशिक्षा का तिमिर
ऐ 'मयंक' अब कोई भी कुछ भी कहे
हर तरफ बस ज्ञान की गंगा बहे।

कोई भी अनपढ़ न दुनिया में रहे
हर तरफ बस ज्ञान की गंगा बहे।

शान है

जिस झंडे की सबसे ऊँची शान है
उस झंडे पर सब का दिल क़ुर्बान है ।

जिसकी ख़ातिर लाखों सर क़ुर्बान हुए
उस परचम की प्यारी शान निराली है
तीन रंग का प्यारा अपना झंडा है
जिसकी ये सारी दुनिया मतवाली है
जिसकी हिफ़ाज़त हम सबका अरमान है
उस झंडे पर सबका दिल क़ुर्बान है ।

सदा प्यार का सबको ये देता पैग़ाम
इससे सारे मज़हब हैं और सारे धाम
ये ऊँचा है तो ऊँचा भारत का नाम
जो कि अपना धर्म, और ईमान है
उस झंडे पर सबका दिल क़ुर्बान है ।

रंग श्वेत ये अम्न हमें सिखलाता है
केसरिया वीरों की गाथा गाता है
हरा रंग शुभ हरित क्रांति का द्योतक है
चक्र शांति के गीत सदा दोहराता है
जिसके लिए सबके दिल में सम्मान है
उस झंडे पर सबका दिल क़ुर्बान है ।

नमन के लिए

सर झुकेगा बस उनके नमन के लिए
हँसते हँसते मिटे जो वतन के लिए।

मादरे-हिन्द की जब मैं पूजा करूँ
शत्रु का ख़ून हो आचमन के लिए।

है हसीं रूप वाला हमारा वतन
हिन्द मशहूर है बाँकपन के लिए।

दूर होंगे जो अपने वतन से कभी
दिल तड़पता रहेगा मिलन के लिए।

शत्रुओं को भी इसने सहारा दिया
जब भी आया है कोई शरण के लिए।

चन्द धागों की ख़ातिर इसी देश में
जान देते हैं भाई बहन के लिए।

जो शहीदों की यादों में बहते रहें
चाहिए अश्रु ऐसे नयन के लिए।

फिक्र के खूँ से गुलशन को महका सके
बाग़बाँ चाहिए वो चमन के लिए।

गर ज़रूरत कभी आ पड़ी ऐ **'मयंक'**
जान दे देंगे अपने वतन के लिए।

जवाहर लाल

जवाहर लाल नहरू इस वतन के पासबाँ थे तुम
है सच आज़ादिए भारत के मीरे-कारवाँ थे तुम।

जहाँ तकरीर की तुमने, वहीं दुश्मन दहल उठ्ठा
ख़िलाफ़ अँग्रेज़ के बेशक बने शोला बयाँ थे तुम

जिसे देकर लहू अपना शहीदों ने लगाया था
उसी बाग़े-वतन के ऐ जवाहर बाग़बाँ थे तुम।

ग़ुलामी में तड़पते हिन्द को आज़ाद करवाया
अरे ऐ हिन्द के प्यारे ग़ज़ब के मेहरबाँ थे तुम।

तुम्हीं ने तो दिया था अम्न का पैग़ाम दुनिया को
इसी ख़ातिर तो कहते हैं सभी, फ़ख़्रे जहाँ थे तुम।

तुम्हीं थे पासबाँ, मज़दूर, बेकस और किसानों के
ग़रीबों के मसीहा बेज़ुबानों की ज़ुबाँ थे तुम।

तुम्हीं थे लाल, मोती के, जवाहर बन के जो चमके
तुम्हीं थे लाड़ले बापू के और भारत की जाँ थे तुम।

कि जिसकी रहबरी से इज़्ज़तो शोहरत मिली सबको
यक़ीनन क़ाफ़िलाए हिन्द के वो निगहबाँ थे तुम।

तुम्हारी महरबानी से चढ़े परवान अदब और फ़न
अदब फ़न शाइरी और शाइरों के क़द्रदाँ थे तुम।

बसे हो आज भी बच्चों के दिल में तुम चचा बनकर
हमारी ज़िन्दगानी के भी नहरू पासबाँ थे तुम।

हिन्दी को अपनाओ

हिन्दी को अपनाओ, आओ हिन्दी को अपनाओ
हिन्दी सारे देश की भाषा, मत इसको बिसराओ ।
तुम हिन्दी को अपनाओ ।

हिन्दी देवनागरी लिपि से देवों की है वाणी,
हिन्दी है साक्षात सरस्वति, हिन्दी है कल्याणी
सीख के हिन्दी, धरम ग्रंथ पढ़, जीवन सफल बनाओ ।
तुम हिन्दी को अपनाओ ।

हिन्दी भारत के हर हिस्से में है बोली जाती,
'एक है भारत' सच्चाई को साकार बनाती
सीख के हिन्दी को सच्चे भारतवासी कहलाओ ।
तुम हिन्दी को अपनाओ ।

राजकाज में हिन्दी लाकर दूर करो अंगरेज़ी,
इस पुनीत शुभ कार्य में तुमको लानी होगी तेजी
हिन्दी लाकर दास भावना से छुटकारा पाओ ।
तुम हिन्दी को अपनाओ ।

हिन्दी में लिक्खेंगे नोटिंग पत्राचार करेंगे,
कोई भी कठिनाई हो हिन्दी से प्यार करेंगे
गाँधी और विनोबा का सपना साकार बनाओ ।
तुम हिन्दी को अपनाओ ।

तिरंगा झंडा

हर कोई फिर जन गण मन दुहराएगा
मस्त तिरंगा नभ में जब लहराएगा

नेहरू गाँधी इन्द्राजी की जान है ये,
भगत, सुभाष और बिस्मिल का ईमान है ये,
अमर शहीदों की गाथाएँ गाएगा,
मस्त तिरंगा नभ में जब लहराएगा।

सरहद पर जब इसको हम फहराते हैं,
हिन्द के दुश्मन देख इसे थर्राते हैं,
गौरव से हम सबका मन हर षाएगा
मस्त तिरंगा नभ में जब लहराएगा।

इसने कुछ ऐसी ऊँचाई पाली है
सब कहते हैं इसकी शान निराली है,
विश्व विजय करके सबको दिखलाएगा,
मस्त तिरंगा नभ में जब लहराएगा।

इसकी खातिर अपनी जान लुटाएँगे,
इसको हम सबसे ऊँचा फहराएँगे,
सपन शहीदों के साकार बनाएगा,
मस्त तिरंगा नभ में जब लहराएगा।

शत-शत नमन

मेरा उन शहीदों को शत-शत नमन,
ऋणी जिनके बलिदान का है वतन

दिलों से ना उनको कभी हम भुलाएँ
सदा उनकी यादों में मेले लगाएँ
भिगोएँगे यादों में उनकी नयन... मेरा उन...

वतन के लिए जान देकर गए जो,
धरम और ईमान देकर गए जो,
जिन्होंने वफ़ा का सिखाया चलन... मेरा उन...

मुनासिब नहीं है उन्हें भूल जाना,
सुनाएँगे हम सबको उनका फ़साना,
फ़ना हो गए जो निभाकर वचन... मेरा उन...

कि जो सरहदों पर ख़ुशी से लड़े थे,
कि जो अपने दुश्मन पे भारी पड़े थे,
जिन्हें मिल न पाए थे क़ब्रो-कफ़न... मेरा उन...

नमन

तुझको शत-शत हमारा नमन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन,
शान तेरी बढ़ाएँगे हम
जान तुझपे लुटाएँगे हम
तेरी इज़्ज़त में प्यारे वतन
चाँद तारे लगाऐंगे हम
तुझपे क़ुर्बां हैं ये जानो तन... ऐ वतन, ऐ वतन...

राम नानक का प्यारा है तू
ख़्वाजा जी का दुलारा है तू
जो भी क़ुर्बान तुझ पर हुए
उनकी आँखों का तारा है तू
तेरे चर्चे हैं हर अंजुमन... ऐ वतन, ऐ वतन...

आँख तुझ पर उठी बद अगर
उसको रख देंगे हम फोड़कर
शान जो भी घटाए तेरी
तोड़कर उसके हाथ और सर
उसके ख़ूँ से करें आचमन... ऐ वतन, ऐ वतन...

तेरी शामे अवध है हसीं
कम शबे मालवा भी नहीं
देखकर सुब्हे वाराणसी
स्वर्ग लगता है, है बस यहीं
क्या हसीं है तेरा बाँकपन ... ऐ वतन, ऐ वतन...

चन्दन है

मेरे भारत की मिट्टी - रोली गुलाल चन्दन है,
ऐसी मिट्टी को हम सब का शत-शत अभिनन्दन है।

बुरी नजर से कोई इसको देखेगा भी कैसे,
जिसका रखवाला ब्रज मंडल का गोकुल नन्दन है।

मर कर के भी इससे नाता टूट नहीं पाएगा,
कुछ ऐसा प्यारा अटूट इसका मेरा बन्धन है।

तेरे हम एहसान भुलाएँ कभी नहीं हो सकता,
तुझ पर जाँ क़ुर्बान करेंगे यह हम सबका प्रण है।

जिसको देश प्रेम की दौलत मिल न सके जीवन में,
सोने-चाँदी की दौलत पाकर भी वो निर्धन है।

अन्धकार में डूबे पश्चिम वालों से है कहना,
सबसे पहले भारत में देता सूरज दर्शन है।

नत मस्तक होकर 'मयंक' करबद्ध खड़ा है कहता,
भारत के ऐ वीरो तुमको कोटि-कोटि वन्दन है।

प्यारा वतन

ये हमारा वतन जाँ से प्यारा वतन,
ये शहीदों की आँखों का तारा वतन

जो भी आया उसे इसने अपना लिया,
सबको देता रहा है सहारा वतन

बद नजर से कोई तुझको देखे अगर,
ये न कर पाएँगे हम गवारा वतन,

हर घड़ी सोचता हूँ तेरे प्यार का,
किस तरह क़र्ज़ जाए उतारा वतन

लाख रहता हूँ मैं दूर तुझसे मगर,
भूल पाता न तेरा नज़ारा वतन

जानो ईमान .कुर्बान कर देंगे हम
तू जो कर दे जरा सा इशारा वतन

हम सभी की यही आरज़ू है **'मयंक'**
झुक न पाए कहीं भी हमारा वतन।

हिन्दुस्तान लिख देना

मेरी तक़दीर के कातिब मेरी पहचान लिख देना
मेरे तन के हरिक हिस्से पे हिन्दोस्तान लिख देना।

मुझे मन्दिर भी प्यारा है मुझे मस्जिद भी प्यारी है
कहीं भगवान लिख देना कहीं रहमान लिख देना।

मुझे हिन्दू मुसलमाँ कुछ भी लिख देना मगर पहले
वतन पे जाँ निसारी को मेरा ईमान लिख देना।

वतन के काम आ कर आबरू रक्खे घराने की
मेरी क़िस्मत में भी कोई ऐसी संतान लिख देना।

वतन की शान में कुछ शेर लिखने की तमन्ना थी
कहाँ चाहा था मैंने कब कोई दीवान लिख देना।

किसी को अहले ज़र लिखना किसी को शुहरतों वाला
हमारे नाम के आगे फ़क़त इंसान लिख देना।

भारत देश महान

आओ इस पर कर के गाएँ तनमन धन क़ुरबान
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान
कोई इसको कहे इण्डिया कोई हिन्दुस्तान
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान
सबसे पहले आकर सूरज यहीं उजाला देता
तन मन पे छाए नफरत के अँधियारे हर लेता
सत्य अहिंसा देश प्रेम के गूँजे जिसमें गान
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान
तीन ओर से करता है सागर जिसकी रखवाली
मध्य भाग में बहती है गंगा यमुना मतवाली
उत्तर में हिम राज खड़ा है बनकर के दरबान
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान
हर मज़हब के लोग यहाँ पर मिल जुल कर रहते हैं
बड़े गर्व से ख़ुद को यह भारत वासी कहते हैं
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सब इसकी सन्तान
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान
इसमें जन्मे राम कृष्ण ख़्वाजा नानक और गाँधी
जिनके दम से आ न सकी इसमें नफ़रत की आँधी
मिल जुल कर पढ़ते सब जिसमें गीता और क़ुरान
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान

अपना मस्त तिरंगा झंडा तीन रंग का प्यारा
इसकी शान घटाए कोई हमको नहीं गवारा
झुकने ना देंगे इसको जब तक है तन में प्राण
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान
अलग अलग परिवेश हमारे अलग अलग भाषाएँ
अविभाजित भारत की रखते है हम अभिलाषाएँ
है अखण्ड गणतन्त्र हमारा जिसका एक विधान
हमारा भारत देश महान
हमारा भारत देश महान

क़दम बढ़ाता चल

भारत माता के सैनानी क़दम बढ़ाता चल
रुकने की मत कर नादानी क़दम बढ़ाता चल।

अगर ज़रूरत पड़ जाए तो देश की ख़ातिर तू
हर सुख की देकर क़ुर्बानी क़दम बढ़ाता चल।

उन्नति की नूतन राहों पे चलने वालों में
कोई नहीं है तेरा सानी क़दम बढ़ाता चल।

इक दिन सबको मरना है तो मरने का क्या डर ?
ये दुनिया है आनी जानी क़दम बढ़ाता चल।

कठिन परिस्थितियों में चलने का कर ले तू अभ्यास
मौसम आएगा तूफ़ानी कदम बढ़ाता चल।

ख़ुदग़रज़ी और अनाचार के हाथों भारत की
लाज पड़ेगी तुझे बचानी कदम बढ़ाता चल।

हाथों में संगीन लिए घायल सरहद की ओर
जाँ देने को ओ बलिदानी कदम बढ़ाता चल।

साथ 'मयंक' चलेगा तेरे इतना वादा है
वीर सिपाही हिन्दुस्तानी क़दम बढ़ाता चल।

अमर बनाना होगा

वक्त आ गया है हम सबको प्रण दोहराना होगा
भारत माँ की आज़ादी को अमर बनाना होगा।

छाया है चहुँ ओर निराशाओं का घोर अँधेरा
मिलकर नूतन आशाओं का दीप जलाना होगा।

टेढ़ी नज़रों से देखेगा जो भारत माता को
तय है उस दुश्मन को अपना, प्राण गँवाना होगा।

अगर बचाना है भारत को फिर खण्डित होने से
तो हम सबको आपस का हर वैर भुलाना होगा।

जो कुर्बान हुए भारत पर अपना सब कुछ देकर
उनके मज़ारों पर श्रद्धा से शीश झुकाना होगा।

पनप न पाएँ स्वार्थ शिथिलता अनाचार भारत में
पुनः शहीदों की गाथाओं को दुहराना होगा।

भारत हो फिर 'स्वर्ग चिरैया' ये संकल्प उठाकर
आज़ादी का स्वर्ण जयंती वर्ष मनाना होगा।

ऐ '**मयंक**' फिर नए सिरे से भारत हित में हमको
नई घोषणाओं का नूतन बिगुल बजाना होगा।

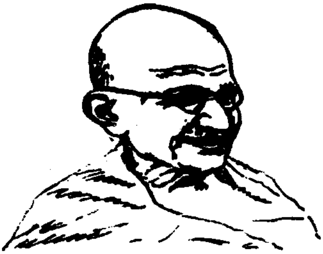

बापू

भारत माँ के प्यारे बापू
सबकी आँख के तारे बापू।

सत्य अहिंसा से आजादी
देकर गए हमारे बापू।

मुफ़लिस हरिजन और पिछड़ों के
हरदम बने सहारे बापू।

अब भी सब को राह दिखाते
बनकर चाँद सितारे बापू।

कैसे देश चुका पाएगा
ये सब क़र्ज़ तुम्हारे बापू।

नफ़रत के हर अँधियारे में
लगते हैं उजियारे बापू।

आई 'मयंक' को याद तुम्हारी
ले अश्कों के धारे बापू।

मेरा सलाम

जिसपे जनमे बुद्ध, नानक, कृष्ण, राम
उस ज़मीने-हिन्द को मेरा सलाम।

अश्क आँखों से बहा कर कीजिए
हर शहीदाने वतन का एहतराम।

देश से बढ़ कर कोई ईमाँ नहीं
ये शहीदों का हमारे है पयाम।

आज ये अपना वतन आज़ाद है
हम नहीं है अब किसी के भी ग़ुलाम।

उनकी अज़्मत और भी बढ़ जाएगी
जो करेंगे इस तिरंगे को सलाम।

दोस्तो ! ये वक़्त की आवाज है
आपका आराम करना है हराम।

मेहनत कश इंसान

मेहनत कश इंसान बनो तुम, मेहनत कश इंसान बनो
भारत की पहचान बनो तुम, भारत की पहचान बनो ।

हिन्द के ऐ मज़दूर किसानों, अपनी ताक़त पहचानो,
ऐ भारत माँ की संतानों, वीर सिपाही दीवानो,
शांति दूत बन कर तुम जग में भारत माँ की शान बनो
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो
भारत की पहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो ।

ऐ सीमा के पहरे दारो ! ऐ भारत माँ के प्यारो
संङ्कट आने पर जानो-तन देश की ख़ातिर तुम वारो,
तन-मन-धन सब क़ुर्बां कर के भारत का सम्मान बनो
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो
भारत की पहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो ।

राम कृष्ण की इस धरती की तुमको लाज बचानी है,
ख़्वाजा और नानक की शिक्षा घर-घर तक पहुँचानी है
राष्ट्रधर्म को ठुकरा दे जो मत ऐसे नादान बनो
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो
भारत की पहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो ।

तुमको मेहनत से निज खेतों में सोना उपजाना है
औद्योगिक उत्पादन करके देश को स्वर्ग बनाना है
ज्ञान जगत को जो दे हरदम तुम ऐसे विद्वान बनो
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो
भारत की नहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो।

भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान

कहनी है इक बात तुम्हारा ध्यान चाहिए,
जाति पाँति से हटकर अगर जहान चाहिए
तो 'भीम' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

ऊँच-नीच और भेदभाव जिसका आधार हो,
बराबरी के दर्जे से जिसको इनकार हो
पिछड़े वर्गों का जिसमें जीना दुश्वार हो,
ऐसी व्यवस्था से गर निदान चाहिए
तो 'भीम' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

आज ज़रूरत है हमको इक ऐसे राज की,
रक्षा जिसमें होती हो शोषित की लाज की
राजनीति से बढ़कर हो सेवा समाज की,
दलितों को भी मिलना यदि सम्मान चाहिए
तो 'भीम' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

भारत को गर टुकड़े होने से बचाना है,
देश की आज़ादी को यदि अमर बनाना है
उच्च वर्ग के लोगों को इतना समझाना है,
"कुछ स्वार्थों को कर देना क़ुर्बान चाहिए"
तो 'भीम' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

क़सम है तुमको सरहद पे तैनात जवानों की,
खेतों के मज़दूरों की, हल-बैल किसानों की
बात माननी होगी तुमको हम दीवानों की
दलितों का करना समुचित उत्थान चाहिए
तो 'भीम' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

आज ज़रूरत है नेता ईमानदार हो,
जिस पै कुर्सी का नशा नहीं सवार हो
संविधान रचने जैसी क्षमता अपार हो,
बाबा साहब जैसा नेता महान चाहिए
तो '**भीम**' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

मज़हब अब अपनों पे करता अत्याचार है
अपनों को अपनाने से उसको इनकार है
भेदभाव भी मज़हब को अब तो स्वीकार है
हमको इस कुव्यवस्था से गर निदान चाहिए
तो '**भीम**' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

हरिजन ही ज़ब हरि के दर्शन कर ना पाएँगे
मंदिर जाने पर बिन कारण दुत्कारे जाएँगे।
भीमराव के वचन हमें तब याद दिलायेंगे
दलितों के उत्थान का नव अभियान चाहिए
तो '**भीम**' के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।

भीमराव अम्बेडकर

थे ग़रीबों का सहारा, शोषितों के हमसफर
थे दुखीजन के मसीहा भीमराव अम्बेडकर।

आप ही ने तो बताया था सभी जन हैं समान
आप ही थे अहले फ़न, अहले अदब, अहले नज़र।

आपने अंतर मिटाया जाति का और धर्म का
आप भटके देश को ले आए उन्नति-मार्ग पर।

औरतों को हक़ दिलाया, देके हिन्दू कोड बिल
अब न भटकेगी कोई भारत की औरत दरबदर।

एकता का पाठ भारत को पढ़ाया आपने
आप का मशकूर है इस देश का हर इक बशर।

बाबा अवतारी पुरुष थे जानते हैं सब 'मयंक'
काश फिर आ जाएँ लेने अपने भारत की ख़बर।

नई चेतना

नई चेतना का हर दिल में दीप जलाएँगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाएँगे,

नई रौशनी लेकर सूरज यहाँ उजाला देगा
ज्ञान ज्योति से हर इक मन का अँधियारा हर लेगा
दुनिया से अज्ञान भाव को दूर भगाएँगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाएँगे।

कोई भी हो धर्म मगर हम सब हैं हिन्दुस्तानी,
गीता-कुरआँ कहते हैं, ये कहती है गुरुबानी
राष्ट्रधर्म को हम अपना ईमान बताएँगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाएँगे।

हम प्रत्येक ऋतु में करते हैं मेहनत की पूजा,
इससे बढ़कर मन में कोई भाव नहीं है दूजा,
मेहनत करके मिट्टी से हम स्वर्ण उगाएँगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाएँगे।

माया मोह पाश में जो भटके हैं ये संसारी,
मानवता औ सच्चाई के हैं ये सब व्यापारी,
अब न यहाँ बाज़ार जिस्म के लगने पाएँगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाएँगे।

ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं

गौतम ख़्वाजा की धरती पै अम्न का एक निशान नहीं
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।
हिन्दू मुस्लिम सिख तो मिलते पर मिलते इंसान नहीं
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।

सीमापार के लोगों ने कुछ ऐसी आग लगाई है
छाया है आतंकवाद भाई का दुश्मन भाई है
चौराहों पर माता बहिनों की होती रुसवाई है
रखवालों ने मिल-जुलकर चोरों सी घात लगाई है
मासूमों की आँखें नम हैं होंटों पर मुस्कान नहीं।
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।

नेता यहाँ बना व्यापारी राजनीति एक मण्डी है
क्रेता जिसके बुद्धू हैं और विक्रेता पाखण्डी है
दौलत की वो लेके तराजू मार रहा बस डण्डी है
टुकुर-टुकुर सब जनता देखे बनकर आज शिखण्डी है
अपनी कुर्सी छोड़ किसी भी चीज़ का इनको ध्यान नहीं।
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।

मन्दिर मस्जिद 'ट्रम्पकार्ड' हैं राजनीति की चालों में
झगड़े रोज हुआ करते हैं धर्म और ईमाँ वालों में
मस्जिद में अज़ान नहीं है पूजा नहीं शिवालों में
मस्जिद मन्दिर दोनों का अस्तित्व है आज सवालों में
मस्जिद में अल्लाह नहीं है मंदिर में भगवान नहीं
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।

ये अर्ज़ है इस दीवाने की

मिल जुल के रहना सीखो मत बात करो टकराने की
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।

सरहद पर बहने वाला ख़ूँ हर पल देता है आवाज़
सर पै कफ़न अब बाँध के निकलो भारत माता के जाँबाज़
कोशिश तुमको करनी है फिर इसकी शान बढ़ाने की
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।

हम बंगाली, गुजराती, हैं आसामी, मद्रासी हैं
लेकिन इन सबसे पहले हम केवल भारतवासी हैं
खाओ क़सम, एकता की हर दिल में जोत जलाने की
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।

कोई भी दुश्मन हो आकर जब हमसे टकराएगा
अपने मुँह की खाएगा और मिट्टी में मिल जाएगा
अब तैयारी करो वतन पै अपनी जान लुटाने की
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।

घर में आग नहीं लग जा घर ही के अंगारों से
सँभल के रहना अपने घर में छुपे हुए ग़द्दारों से
कुछ तो अब तरकीब करो नफ़रत की आग बुझाने की
ये अर्ज़ है इस दीवाने की॥

जलने न देंगे हम

इस आतंकवाद को पलने ना देंगे हम
दुश्मन तेरी चालों को चलने ना देंगे हम

पंजाब कश्मीर को जलने ना देंगे हम।
जो बलवा करवाए-खालिस्तान के लिए
जो सिरदर्द बना है हिन्दुस्तान के लिए।
मौत बनेंगे ऐसे पाकिस्तान के लिए
इतना मारेंगे कि सम्भलने ना देंगे हम
पंजाब कश्मीर को जलने ना देंगे हम।

हिन्द के वीर शहीदों क़ा सम्मान करेंगे
अपनी यकजहती का यूँ ऐलान करेंगे
वक्त पड़े तो औलादें क़ुर्बान करेंगे
हाथ से दुश्मन को निकलने ना देंगे हम
पंजाब कश्मीर को जलने ना देंगे हम।

वक़्त आ गया है अब तैयार हो जाएँ
घर के भेदी से भी सब हुशियार हो जाएँ
यूँ कहके, दुश्मन की हद-के पार हो जाएँ
मक्कारों को देश में फलने ना देंगे हम
पंजाब कश्मीर को जलने ना देंगे हम।

निर्दोषों की हत्या ही जिसका अरमान है
वो इंसान नहीं है वो पक्का शैतान है
दंगा बलवा करवाना जिसका ईमान है
ऐ **'मयंक'** अब दाल उसकी गलने ना देंगे हम
पंजाब कश्मीर को जलने ना देंगे हम।

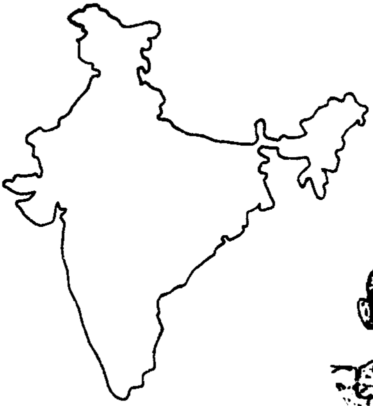

मेरा वतन

ये मेरा वतन है ये मेरा वतन है
जहाँ आम इश्को वफ़ा का चलन है
ये मेरा वतन है ये मेरा वतन है

यहाँ अम्न की सीख देती है गंगा
मुहब्बत का पैग़ाम देता तिरंगा
जिसे आसमाँ झुकके करता नमन है
ये मेरा वतन है.....

अगर सारी दुनिया में जन्नत कहीं है
यक़ीनन यहीं है यहीं है यहीं है
कि जिसका हँसी रूप और बाँकपन है
ये मेरा वतन है......

हैं सबसे बहादुर यहाँ के सिपाही
तवारीख़ देती है इसकी गवाही
शहादत की जिनके दिलों में लगन है
ये मेरा वतन है....

भगत, चन्द्र शेखर हुए जिस पे क़ुर्बां
और अशफ़ाक़ उल्ला फ़िदा कर गए जाँ
जहाँ सर पे बाँधा सभी ने कफ़न है
ये मेरा वतन है.....

है उत्तर में केसर के फूलों की वादी
जहाँ आ गए हैं अब आतंकवादी
भगा देंगे उनको ये अपना वचन है
ये मेरा वतन है.....

इसी ने ज़माने को जीना सिखाया
सदा नफ़रतों का अँधेरा मिटाया
मुहब्बत भरा जिसका वातावरन है
ये मेरा वतन है.....

कथन है

यही अपने बुज़ुर्गों का कथन है
कि बढ़के जान से अपना वतन है।

हवाओं में फ़सादों की तपन है
लहू से तर-बतर सारा चमन है।

ये मस्तक है झुका सजदे में इसके
हसीं परचम तिरंगे को नमन है।

ओ जननी जन्मभूमी दूर तुझसे
दुखों से अश्रुपूरित हर नयन है।

शहीदों ने जिसे सींचा लहू से
मिरे भारत तुझे शतशत नमन है।

बचाएँगे तुझे हर इक बला से
ये हर हिन्दोस्तानी का वचन है।

'मयंक' अब राहे भारत पर चलेंगे
थकावट है न अब कोई घुटन है।

वन्दे मातरम्

जाँबाजों का गान है वन्दे मातरम्
भारत का सम्मान है वन्दे मातरम्।

इससे बढ़के गीत न कोई दुनिया में
भारत माँ की आन है वन्दे मातरम्।

यही भजन है यही तिलावत यही सबद
यही धरम ईमान है वन्दे मातरम्।

आओ मिलजुल कर सब गाएँ गीत यही
भारत माँ की शान है वन्दे मातरम्।

सारी दुनिया जाने और सदा माने
हम सब की पहचान है वन्दे मातरम्।

आज़ादी है जन्म सिद्ध अधिकार '**मयंक**'
और इसका ऐलान है वन्दे मातरम्।

गणतन्त्र मनाएँ

आओ हम गणतंत्र मनाएँ।
भारत माँ के श्री चरणों में, मिलजुल कर सब शीश झुकाएँ।
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।

आज के दिन खुद अपना बनाया, संविधान हमने था पाया
जनता पर जनता के द्वारा आज के दिन था शासन आया
आओ उसकी याद करें और घर घर घी के दीप जलाएँ,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।

आज के दिन जन्मा था जग में एक छत्र गणतंत्र हमारा,
खाई थीं क़स्में कि ये भारत कभी न हो परतंत्र हमारा,
आओ उन पावन क़स्मों को मिलजुल कर हम फिर दुहराएँ,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।

इस दिन को लाने में दी थीं लाखों लोगों ने कुर्बानी,
इसकी ख़ातिर ख़ूब लड़ी थी, झाँसी की रानी मर्दानी,
आओ हम सब फिर दुहराएँ अमर शहीदों की गाथाएँ,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।

इस विधान को भीमराव ने अपने हाथों स्वयं गढ़ा था,
मरते दम तक दलितों, पिछड़ों के हक में वो ख़ूब लड़ा था,
आओ प्यारे नेताओं के स्वप्नों को साकार बनाएँ,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।

मेरे हिन्दोस्ताँ

तेरी धरती को चूमे बुलन्द आसमाँ
मेरे हिन्दोस्ताँ, मेरे हिन्दोस्ताँ।

तेरे माथे पै ताजे-हिमाला, वतन
हार तेरे गले की हैं गंगो-जमन
तेरे हर शहर में है वफ़ा का चलन
तेरे दक्खिन में सागर पखारे चरन
बस तुझी से है वाबस्ता, हर दास्ताँ
मेरे हिन्दोस्ताँ, मेरे हिन्दोस्ताँ।

जो भी आया उसी को सहारा दिया
अपने दामन का हर सर को साया दिया
अम्न का तूने हर दम जलाया दिया
ज़िन्दगी को नया इक सलीक़ा दिया
तेरे दम से जहाँ में है अम्नो-अमाँ
मेरे हिन्दोस्ताँ, मेरे हिन्दोस्ताँ।

राम नानक कन्हैया का प्यारा है तू
ख़्वाज-ए-चिश्त का भी दुलारा है तू
कब किसी से ज़माने में हारा है तू
हाँ ! शहीदों की आँखों का तारा है तू
तुझ पै क़ुर्बान करते हैं ये जिस्मो-जाँ
मेरे हिन्दोस्ताँ, मेरे हिन्दोस्ताँ।

हिन्दुस्तान चाहिए

कहनी है इक बात तुम्हारा ध्यान चाहिए,
मुझको हँसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।

हाँ सिक्खों की कहानी उनको याद नहीं है,
नानक जी की बानी उनको याद नहीं है
गुरुओं की क़ुर्बानी उनको याद नहीं है,
जो कहते हैं हमको 'खालिस्तान' चाहिए
मुझको हँसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।

ग़द्दारों ने भारत देश ग़ुलाम किया था,
इसे मीर जाफ़र ने भी बदनाम किया था।
जयचन्दों ने पृथ्वी को नीलाम किया था,
धरती का फिर से वापस सम्मान चाहिए
मुझको हँसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।

झूठे सच्चे वादों में न उलझाओ तुम,
सोने चाँदी का लालच मत दिखलाओ तुम
लम्बी योजनाओं में मत भटकाओ तुम,
मुझको रोटी कपड़ा और मकान चाहिए
मुझको हँसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।

मुझको अंगरेज़ी से क्या लेना देना है,
अपने देश की भाषा में लिखना पढ़ना है
भाषा के मुद्दे पर खुलकर ये कहना है,
मुझको हिन्दी वाला हिन्दुस्तान चाहिए
मुझको हँसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।

ऐ वतन

तेरी धरती को शत शत करें हम नमन,
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।
तुझपे क़ुर्बान करते हैं हम जानो-तन,
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।

देवताओं के प्यारे हमारे वतन,
और शहीदों की आँखों के तारे वतन,
जब भी आए शरण गम के मारे वतन,
सबने पाए हैं तुझसे सहारे वतन,
तुझसे ज़िन्दा है इन्सानियत का चलन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।

आसमाँ से ज़मीं तक तेरा नाम है,
तेरे चरणों में रामेश्वरम धाम है
सत्य की सीख देना तेरा काम है,
सबसे मिलकर रहो, तेरा पैग़ाम है
तेरी सूरत हसीं तेरी सीरत हसीं
सबके मन को लुभाए तेरा बाँकपन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।

सुबह तेरी जवाँ रात तेरी हसीं,
स्वर्ग से भी है बढ़कर तेरी ये जमीं,
तेरे सजदे में झुकते हैं सर हर कहीं,
तेरे जैसा ज़माने में कोई नहीं,
दूर रहता हूँ जब भी मैं तुझसे कभी,
याद में तेरी रोता हूँ प्रत्येक क्षण
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।

जब भी पनपी घृणा की कलुष भावना,
धर्म करने लगा मूढ़ की वन्दना
हो गया शान्ति का पथ लहू में सना
काम आई न पूजा भजन अर्चना,
छाया हरसू निराशा का घनघोर तम
तो दी तूने ज़माने को आशा-किरन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।

ईमान होना चाहिए

यूँ तो हर इक शख़्स का ईमान होना चाहिए,
क़ब्ल इसके वो मगर इन्सान होना चाहिए।

हो जहाँ शिव की अज़ानें और ख़ुदा की आरती,
वो इबादतगाह हिन्दुस्तान होना चाहिए।

हो नहीं हरगिज़ क़लम पाबंद मज़हब से कभी,
हर कवी-शाइर 'मियाँ रसख़ान' होना चाहिए।

प्रेम से मुस्लिम पढ़ें गीता, पुरान और वेद को
हिन्दुओं का राहबर कुरआन होना चाहिए।

गीत कैसे भी लिखें शाइर मगर ये ध्यान दें,
'एकता' हर गीत का उनवान होना चाहिए।

मोमिनों के जहन में सूरत कन्हैया की रहे,
हिन्दुओं के क़ल्ब में रहमान होना चाहिए।

ऐ 'मयंक' इस हिन्द से बढ़ कर कोई मज़हब नहीं,
हिन्द पर हर शख़्स को कुर्बान लेना चाहिए।

एक हो जाओ

यही है वक्त की आवाज़ आओ एक हो जाओ
मुहब्बत प्यार के तुम गीत गाओ एक हो जाओ।

वतन पर मिट गए ऐसे शहीदों की क़सम तुमको
तुम उनकी याद में आँसू बहाओ एक हो जाओ।

तुम्हें कश्मीर को आतंक से आज़ाद करना है
क़सम तुम आज ये खाकर, कि आओ एक हो जाओ।

न मंदिर को गिराएँगे न मस्जिद को गिराएँगे
इसी नारे को मिल जुल के लगाओ एक हो जाओ।

मिटा दो दिल से नफ़रत को मुहब्बत को करो आबाद
अभी भी वक़्त है मिल जुल के आओ एक हो जाओ।

ये कहना है किसानों से व सीमा पर जवानों से
कि मिलजुल के तिरंगे को उठाओ एक हो जाओ।

ये भारत एक है कश्मीर से कन्या कुमारी तक
चलो मिल जुल दुनिया को बताओ, एक हो जाओ।

ऐसी क्या मजबूरी है

रब का घर मिसमार कर रहे, ऐसी क्या मजबूरी है
बरबादी से प्यार कर रहे, ऐसी क्या मजबूरी है।

खेल रहे हैं खूँ की होली क्यों मजहब के नाम पे हम
नफ़रत का संचार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।

अहले सियासत मेरे वतन में दैरो-हरम की लेकर आड़
मज़हब का व्यापार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।

राम के भक्त रहीम के बंदे, गलियों और चौराहों पर
लाशों का अम्बार कर रहे, ऐसी क्या मजबूरी है।

हर मज़हब का एक सार है इस दुनिया का मालिक एक
फिर हम क्यों तकरार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी।

इक दूजे का ख़ूँ करने को संगे सियासत पर घिसकर
क्यूँ पैनी तलवार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।

रोज़े-क़यामत से पहले ही, आज 'मयंक' क़यामत का
हम सब हैं दीदार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।

ज़िन्दगी के लिए

जान जाए वतन की ख़ुशी के लिए
और क्या चाहिए ज़िन्दगी के लिए।

जिस्म-जाँ और फ़िक्र सबकी आज़ाद हो
और क्या चाहिए आदमी के लिए।

अपनी आँखों में सूरज छिपाए हुए
हम भटकते रहे रौशनी के लिए।

मादरे हिन्द का चित्र हो सामने
सर झुकेगा तभी बन्दगी के लिए।

जो भी आया उसे हमने अपना लिया
हिन्द मशहूर है दोस्ती के लिए।

जान देकर निभाई सदा दोस्ती
मौत बन कर रहे दुश्मनी के लिए।

छोड़कर एक ईश्वर को कब ऐ **'मयंक'**
हमने सर को झुकाया किसी के लिए।

हिन्द के सैनानी

सर से कफ़न बाँध कर निकले, देने कुर्बानी,
हिन्द के सेनानी- हिन्द के सेनानी ।

सीमा पार के दुश्मन से हमको इतना कहना है,
हम से मत टकराना गर तुझको ज़िन्दा रहना है,
नक़्श मिटा देंगे ये तेरा मन में अगर ठानी,
हिन्द के सेनानी- हिन्द के सेनानी ।

हम सैनिक भारत माँ की आजादी के रखवाले,
देश के दुश्मन की ख़ातिर हैं आफ़त के परकाले,
होश में आ जा पाक न कर सीमा पे मनमानी,
हिन्द के सेनानी- हिन्द के सेनानी ।

ये नहरू, गाँधी, सुभाष और भगत सिंह के बेटे
घूमें माँ के प्रहरी बनकर सर पर कफ़न लपेटे,
इन्हें प्रेरणा देती हरदम झाँसी की रानी,
हिन्द के सेनानी- हिन्द के सेनानी ।

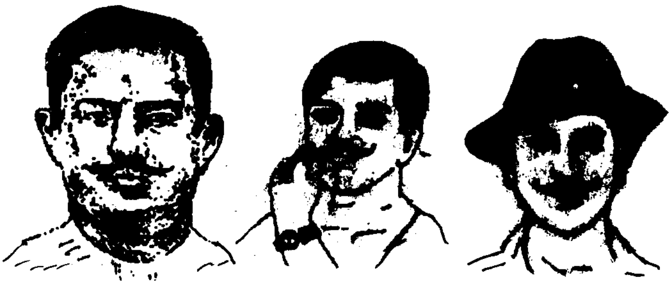

शहीदों को नमन

है ऋणी जिनकी कुर्बानियों का वतन
उन शहीदों को मेरा नमन

उनको दिल से कभी ना भुलाएँगे हम
उनकी यादों में मेले लगाएँगे हम
फूल श्रद्धा के ऐसे चढ़ाएँगे हम
उनकी गाथाएँ सबको सुनाएँगे हम
जिनकी यादों में रहते हैं तर ये नयन
उन शहीदों को मेरा नमन

जो वतन के लिए जान देकर गए
अपने हर सुख का बलिदान देकर गए
अपना मान और सम्मान देकर गए
अपना धर्म और ईमान देकर गए
प्राण देकर जिन्होंने निभाया वचन
उन शहीदों को मेरा नमन

जो कि सीमाओं पर वीरता से लड़े
चन्द सैनिक हजारों पे भारी पड़े
लेके हथियार जब हो गए वो खड़े
सूरमा रुक न पाए बड़े से बड़े
मिल न पाए जिन्हें कब्र, आग और कफन
उन शहीदों को मेरा नमन

धन्य वीरों की हैं वो अमर डोलियाँ
खा गए जो वतन के लिए गोलियाँ
जिनके घर तक न पहुँची कभी डोलियाँ
जिनकी आशाओं की जल गई होलियाँ
जो कभी दासता कर न पाए सहन
उन शहीदों को मेरा नमन

हसीं है

जो दुनिया में सबस ज़ियादा हसीं है
वो मेरे वतन हिन्द की सरजमीं है।

अगर फर्शे दुनिया पे जन्नत कहीं है
यहीं है, यहीं है, यहीं है, यहीं है

कोई भी वतन हिन्द सा खूबसूरत
नहीं है, नहीं है, नहीं है, नहीं है।

इक इसके खुलूसो वफा पे सभी को
यकीं है, यकीं है, यकीं है, यकीं है।

अब इसके हसीं रूप को क्या कहूँ मैं
ये शबनम में डूबा गुले तर हसीं है।

'मयंक' इस वतन से बस इतना है नाता
मैं इसका हूँ और ये मिरा हमनशीं है।

आज़ादी का स्वर्ण जयन्ती वर्ष

ख़ुश हो नाचेंगे गाएँगे धूम मचाएँगे,
आज़ादी का स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाएँगे

ऐसी दौलत जिनकी बदौलत प्राप्त हुई हमको,
नत मस्तक हो श्रद्धा सुमन चढ़ाएँगे उनको,
अमर शहीदों की गाथाओं को दुहराएँगे,
आज़ादी का स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाएँगे

राष्ट्रगीत से बढ़कर कोई गीत नहीं अपना
कभी तिरंगा झुके नहीं ये सबका सपना
"जन गण मन अधिनायक जय", हेमिलकर गाएँगे
आज़ादी का स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाएँगे ।

नया उजाला ले कर सूरज इसी वर्ष था आया,
आज़ादी की किरणों से भारत को था चमकाया
पैग़ामे - आज़ादी हम घर-घर पहुँचाएँगे
आज़ादी का स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाएँगे

सपनों वाला हिन्दुस्तान

करो तुम मुझ पे ये एहसान
ढूँढ़ के लादो मेरे सपनों वाला हिन्दुस्तान
करो तुम....

लाओ वो सब जिसको सोने की चिड़िया कहते हों
जिसमें दूध की नदियाँ चाँदी के झरने बहते हों
जहाँ ग़रीबी नहीं खड़ी हो, अपना सीना तान
करो तुम....

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई मिल जुल कर रहते हों
मिल जुल कर हँसते गाते हों मिल कर ग़म सहते हों
सत्य अहिंसा देश प्रेम हों जिसके लक्ष्य महान
करो तुम....

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, एक हो सबकी भाषा
हिन्दी को अपनाने की हो अब सब की अभिलाषा
दूर भगाएँगे अंग्रेज़ी सभी करें ऐलान
करो तुम....

उत्तर वाले चाव से खाएँ इडली साँभर डोसा
दक्षिण वाले कुल्चे छोले रबड़ी और समोसा
अलग अलग पकवान हों लेकिन एक हो दस्तरख़्वान
करो तुम....

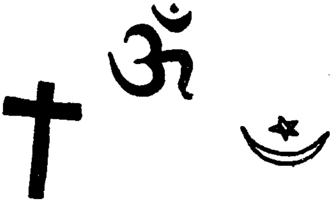

मादरे वतन

मादरे हिन्द तुझको सलाम
अस्सलाम, अस्सलाम, अस्सलाम।

सबसे कहता है माज़ी तेरा
जो है ईश्वर वही है ख़ुदा
धर्मो - ईमान के फ़र्क़ से
हो न पाता किसी का भला
तूने सबको दिया ये पयाम
अस्सलाम......

तूने सम्मान सबका किया
जो मिला उसको अपना लिया
हो वो अपना कि हो ग़ैर ही
आसरा तूने सबको दिया
तुझ पे क़ुर्बां हैं सब ख़ासो-आम
अस्लाम, अस्सलाम....

तेरे जलवों में है बाँकपन
तुझको शत-शत हमारा नमन
है यही आरज़ू जब मरें
हो तिरंगे का तन पे कफ़न
सबके दिल में है तेरा क़याम
अस्लाम, अस्सलाम....

जान तुझपे लुटाएँगे हम
बस तेरे गीत गाएँगे हम
भूलकर अपने मतभेद सब
तेरी इज़्ज़त बढ़ाएँगे हम
फ़ैसला है सभी का ये आम
अस्सलाम, अस्सलाम....

शाने वतन

देश ये एक है हज़ारों में,
जैसे इक चाँद है सितारों में

स्वर्ग जैसे हैं इसके सब गुलशन,
ऐसा लगता है जैसे हो दुल्हन।
जैसे गुलशन कोई बहारों में,
देश ये एक है हज़ारों में।

नदियां लहरा के इसमें बहती हैं
हर तरफ नग़मगीं सी रहती हैं
एक संगीत सा है धारों में
देश ये एक है हज़ारों में।

मोर के रक़्स देखे जाते हैं
गीत कोयल के मन को भाते हैं
ये बसा है दिलों के तारों में
देश ये एक है हज़ारों में।

फूल हसरत के इसमें खिलते हैं
इसमें दिलकश नज़ारे मिलते हैं
गुम हुआ दिल हसीं नज़ारों में
देश ये एक है हज़ारों में।

जैसे इक चाँद है सितारों में,
देश ये एक है हज़ारों में।

वतन की शान

अपने वतन की शान पे क़ुर्बान जाइए
फिर मादरे-ए-वतन का कोई गीत गाइए।

मिट्टी यहाँ की चाँदी से सोने से कम नहीं
सब धर्मों में है एकता कोई भरम नहीं
बस एकता के धर्म पे ईमान लाइए
अपने वतन की शान पे क़ुर्बान जाइए।

कुछ अपनी आन बान पे क़ुर्बान हो गए
और कुछ वतन की शान पे क़ुर्बान हो गए
आज अश्क उनकी याद में मिलकर बहाइए
अपने वतन की शान पे क़ुर्बान जाइए

एहसास देश प्रेम का सबसे महान है
मख़्सूस कुल जहान से भारत की शान है
इसमें **'मयंक'** चाँद सितारे सजाइए
अपने वतन की शान पे क़ुर्बान जाइए।

जीवन भर चलना है

मंजिल तो मृगतृष्णा जैसी छलना है
पथिक तुझे पथ पर जीवन भर चलना है
राह में गिरना ख़ुद ही तुझे सँभलना है
पथिक तुझे पथ पर जीवन भर चलना है।

आँधी तूफ़ाँ राह तेरी जब रोकेंगे
संगी साथी क़दम कदम पर टोकेंगे
दिशा हीन नैया को पार लगाना है
भूले भटकों को रस्ते पर लाना है
तुझको माँझी का दीपक बन जलना है
पथिक तुझे पथ पर जीवन भर चलना है।

अँधियारे से डरना तेरा काम नहीं
उससे डर कर हो जाना बदनाम नहीं
चाँद सितारे तुझको राह दिखाएँगे
शीतलता से तेरी थकन मिटाएँगे
दिन ढलने पर सूरज को भी ढलना है
पथिक तुझे पथ पर जीवन भर चलना है।

फूल खिलाना ही होगा

गुलशन को गुलजार बनाना ही होगा
तूफानों से इसे बचाना ही होगा
सींच के इसको खून पसीने से अपने
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।

दोपहरी है तप्त दूर तक शाम नहीं
दूर दूर काले मेघों का नाम नहीं
फिर भी श्रम के स्वेद बिन्दुओं से अपने
इन बीजों को वृक्ष बनाना ही होगा
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।

हिम्मत हार के माली थककर चूर हुए
खरपतवारों से उपवन भरपूर हुए
नई चेतना से मुर्झाई कलियों को
रंग बिरंगे फूल बनाना ही होगा
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।

बाग में जो ये वीरानी सी छाई है
कौन है जिसने इसको नजर लगाई है
ऐ '**मयंक**' फिर नई बहारों को लाकर
अपनी बगिया को महकाना ही होगा
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।

वफ़ा देंगे

हम हिन्द के वासी हैं पैग़ामे-वफ़ा देंगे
नफरत का जमाने से हर नक़्श मिटा देंगे।

जब देश लहू हम से माँगेगा तो क्या देंगे
जब यूँ ही फ़सादों में, ख़ूँ अपना बहा देंगे।

कश्मीर हमारा है ए पाक तेरे सारे
नापाक इरादों को मिट्टी में मिला देंगे।

भारत की तरक़्क़ी के रस्ते में जो आएगा
हम ऐसा हरिक पत्थर ठोकर से हटा देंगे।

हम लाख बिछुड़ जाएँ लेकिन यह नहीं मुमकिन
तुम हमको भुला दोगे हम तुमको भुला देंगे।

जो धूप-हवा रोके मुफ़लिस मकानों की
हम ऐसी इमारत की बुनियाद हिला देंगे

सौगन्ध उठाते हैं जाँबाज़ शहीदों की
भारत पे **'मयंक'** अपनी हस्ती को मिटा देंगे।

मंज़र है

हिन्द की इबादत का, क्या हसीन मंज़र है
मन्दिरों में अब्दुल है, मस्जिदों में शंकर है।

इक तरफ कन्हैया की साँवरी सुरतिया है
इक तरफ तसव्वुर में जल्व-ए-पयम्बर है।

तुमने धर्म की खातिर जितने घर उजाड़े हैं
कोई उनमें मस्जिद है, कोई उनमें मंदर है।

देश सेवा से बढ़कर कोई धन होता नहीं
सन्त भी ये कहता है, कहता ये कलन्दर है।

मेरे प्यारे भारत की अज़मतों का क्या कहना
माथे पर हिमालय है, क़दमों में समन्दर है।

राम कृष्ण, बुध, नानक सब यहीं पे जनमे हैं
ऐ 'मयंक' जान अपनी हिन्द पर निछावर है।

नहीं लगता

रविश कलियों की फूलों का चलन अच्छा नहीं लगता
न जाने क्यूँ हमें अब ये चमन अच्छा नहीं लगता।

सजा देने का अब कोई नया अन्दाज़ अपनाओ
कि ये हंगाम-ए-दारो- रसन अच्छा नहीं लगता।

कोई पुरज़ोर नग़मा छेड़ ऐ दिल साज़े-हस्ती पर
मुसलसिल ये सुकूते-अन्जुमन अच्छा नहीं लगता।

ये कैसा ज़हर फैला चारसू फ़िरक़ा परस्ती का
कि अब इक हम वतन को हम वतन अच्छा नहीं लगता।

'मयंक' अहले- जहाँ को जो न दर्से ज़िन्दगी बख़्शे
मुझे ख़ुद ऐसा अन्दाज़े-सुख़न अच्छा नहीं लगता।

हिन्दी भाषा

सबके दिल में एक छत्र भारत की जो अभिलाषा है
पूर्ण उसे कर सकती केवल अपनी हिन्दी भाषा है।

देवनागरी हिन्दी भाषा ही देवों की वाणी है
हिन्दी मृदुल मनोहर है और जन जन की कल्याणी है
हिन्दी है पर्याय देश की भारत की परिभाषा है
पूर्ण इसे पर सकती केवल अपनी हिन्दी भाषा है।

वाणी है तुलसी केशव की रहिमन और कबीरा की
वाणी है रसख़ान, मैथिलीशरण, निराला, मीरा की
जन में गूँजे इनकी वाणी अब सबकी ये आशा है
पूर्ण इसे कर सकती केवल अपनी हिन्दी भाषा है।

हिन्दी भाषा आशा की किरणें जब ले कर आती है
मुदित प्रफुल्लित होता मन दुख की बदली छँट जाती है
दूर अगर करना चाहो जो मन में छुपी निराशा है
दूर उसे कर सकती केवल अपनी हिन्दी भाषा है।

मुबारक हो

आज़ादी का स्वर्ण जयंती वर्ष मुबारक हो
पंच दशक में जो पाया उत्कर्ष मुबारक हो।

इस पुनीत और पावन आज़ादी की रक्षा में
तुमको जो करना है वो संघर्ष मुबारक हो।
अमर शहीदों के कारण जो प्राप्त हुआ हमको
ये ख़ुशियों का मौसम और ये हर्ष मुबारक हो।

दे दे कर आशीष शहीदों की रूहें कहतीं
वर्ष मुबारक हो तुमको ये वर्ष मुबारक हो।
गाँधी, नेहरू, लाल बहादुर ने जो हमें दिया
वहीं अहिंसा का 'मयंक' आदर्श मुबारक हो।

गुनगुनाओ तुम

वतन की एकता और शान पर कुर्बान जाओ तुम
लगी जो आग नफ़रत की मुहब्बत से बुझाओ तुम।

कोई मज़हब ज़माने को नहीं नफ़रत सिखाता है
धरम निरपेक्षता का गीत दुनिया को सुनाओ तुम।

वतन की एकता पर मिट गए जो स्वप्न कुछ लेकर
अब उनके ख़्वाब की ताबीर को मिलकर सजाओं तुम।

ज़हर फ़िरक़ा परस्ती का नहीं अब फैलने पाए
सभी मज़हब के लोगों को कलेजे से लगाओ तुम।

अरे-ए- हिन्दुओं- सिक्खों, अरे ओ मुस्लिम-ओ- ईसाई
वतन के दुश्मनों से अपने भारत को बचाओ तुम।

वतन के वास्ते जो हो गए कुर्बान हँस-हँस कर
चलो उनकी समाधी पर, चलो सिर को झुकाओ तुम।

अरे नानक के दीवानो अरे ऐ कृष्ण के प्यारो
न अब ये ख़ून अपने देश का मिलकर बहाओ तुम।

वतन मंदिर, वतन मस्जिद, वतन गिरिजा-ओ-गुरुद्वारा
वतन के प्रेम के ईमान को दिल में बसाओ तुम।

ये भारत माँ जो देखो रो रही है ख़ून के आँसू
हमें डर है न इस सैलाब में ही डूब जाओ तुम।

किसी की जान लेने से कभी झगड़ा नहीं मिटता
अमर हिम्मत है जाँ देकर किसी की जाँ बचाओ तुम।

अरे जिस एकता के वास्ते बापू ने जाँ दे दी
'मयंक' उस एकता का गीत मिलकर गुनगुनाओ तुम।

एक है हिन्दोस्ताँ

एक है अपनी ज़मीं और एक अपना आसमाँ
हम सभी हिन्दी हैं, अपना एक है हिन्दोस्ताँ।

एक है मंज़िल सभी की एक अपनी राह है
हिन्द पर क़ुर्बान हों सब, ये सभी की चाह है।
ताक़यामत हिन्द का चलता रहे ये कारवाँ
हम सभी हिन्दी हैं, अपना एक है हिन्दोस्ताँ।

वेषभूषा है जुदा पर ढंग सबका एक है
गो जुदा हैं जिस्म, ख़ूँ का रंग सबका एक है।
हिन्द पर क़ुर्बान है हर इक अमीरो नातवाँ
हम सभी हिन्दी हैं, अपना एक है हिन्दोस्ताँ।

वीरताओं से भरा इस हिन्द का इतिहास है
बस ख़ुलूसो- प्यार पर अपना रहा विश्वास है।
है अजल से हिन्द ही अम्नो-सुकूँ का आस्ताँ
हम सभी हिन्दी हैं, अपना एक है हिन्दोस्ताँ।

अपनी ख़ातिर धर्म और ईमान सारे एक हैं
अहले दुनिया जानते, अपने इरादे नेक हैं।
है इबादत ये चम्न, और हम हैं इसके बाग़बाँ
हम सभी हिन्दी हैं, अपना एक है हिन्दोस्ताँ।

हो गए क़ुर्बान लाखों लोग हिन्दुस्तान पर
कट गए सर भी हज़ारों इसकी प्यारी शान पर।
इसकी मिट्टी में छिपी, क़ुर्बानियों की दास्ताँ।
हम सभी हिन्दी हैं, अपना एक है हिन्दोस्ताँ।

अमर रहे गणतंत्र

रहे तिरंगा ऊँचा अपना, नहीं कोई परतंत्र।
अपना अमर रहे गणतंत्र।
हवा बही आज़ाद वतन में मौसम हुआ स्वतंत्र
अपना अमर रहे गणतंत्र।

नहीं कोई ग़द्दार देश का बचने पाएगा
घर का हर इक भेदी अपने मुँह की खाएगा।
युवा शक्ति ने आज देश में फूँका है इक मंत्र
अपना अमर रहे गणतंत्र।

आज देश के दुश्मन ने ये मन में ठानी है
लोगों के जीवन से करता वो मनमानी है
देखो तुमको नष्ट न कर दे परदेशी षड़यंत्र।
अपना अमर रहे गणतंत्र।

आज देश की ख़ातिर अपनी जाँ भी देंगे
पड़े ज़रूरत तो अपना ईमाँ भी दे देंगे।
क्या बिगाड़ लेंगे दुश्मन के आज एटमी यंत्र
अपना अमर रहे गणतंत्र।

लोकतंत्र है अपना नारा जनता का है, राज
मिलजुल कर हम सभी करेंगे अपने सारे काज
राजनीति का दूजा कोई पनप न पाए तंत्र।
अपना अमर रहे गणतंत्र।

हिन्द का लख़्ते जिगर बापू

नहीं देखा कभी मेरे वतन ने राहबर तुझसा
नहीं देखा ऐ बापू हमने कोई मोतबर तुझसा।

कभी अपने लिए कुछ भी नहीं माँगा जमाने से
नहीं देखा कभी अपने लिए यूँ बेख़बर तुझसा।

भगा कर रख दिया दुश्मन को तूने हिन्द से बापू
कभी देखा नहीं दुश्मन ने बापू 'पुरख़तर' तुझसा।

किया कुर्बान सब कुछ तूने अपने देश की खातिर
मिलेगा हिन्द को क्या फिर कभी लख़्ते-जिगर तुझसा।

'मयंक' अब सर निगूँ तेरी समाधी पर ये सोचे है
कि मुझको भी कोई शायद मिले बापू हुनर तुझसा।

अज़ीज़ वतन

बिछड़ के जब भी कोई तुझसे दूर रहता है
मिरे अजीज वतन, ग़म से चूर रहता है।

ग़मों की बदलियाँ जब जब भी तुझपे छाती हैं
जिगर पे गम तेरा बनकर के तूर रहता है।

कभी जो तीरगी आती है ज़हनो-दिल में मिरे
तुम्हारा प्यार सदा बन के नूर रहता है।

तुम्हारी शान पे क़ुरबान जो शहीद हुए
ख़याल ज़हन में उनका ज़रूर रहता है।

'मयंक' हिन्द की उलफ़त का ही नशा हरदम
हमारी आँखों में बनकर सुरूर रहता है।

भारत के निशाँ

ए मेरे प्यारे वतन हिन्दोस्ताँ
तुझ पै क़ुर्बां है जिगर दिल और जाँ।

चाँद और सूरज से भी बढ़कर है तू
कह रहे हैं ये ज़मीं और आसमाँ।

क्या तिरंगे की निराली शान है
ख़ूब है ये परचमे-अम्नो-अमाँ।

ये हड़प्पा और मोहिन्जोदड़ो
हैं क़दीमी इन में भारत के निशाँ।

ता क़यामत तू सदा फूले फले
हिन्द का महका करे ये गुलसिताँ।

मिट गईं इन्द्रा जी भारत के लिए
एकता की, ख़ूँ से लिखकर दास्ताँ।

हमारा नारा अखण्ड भारत

भारत माँ के रूप को हमने मन में सदा उतारा है
हम सब हिन्दुस्तानी हैं, जय हिन्द हमारा नारा है।

गंगा, जमना, सरस्वती, चंबल, कृष्णा और कावेरी
कल-कल ध्वनि में ओ भारत माँ गाती है गाथा तेरी।
श्री नगर से रामेश्वर तक कितना हसीं नजारा है
हम सब हिन्दुस्तानी हैं, जय हिन्द हमारा नारा है।

भाषा वेष धर्म और ईमाँ सबके हैं अपने-अपने
किन्तु एकता है इन सब में ये सच भी माना सबने।
हो न एकता खंडित अपनी बस ये ध्येय हमारा है
हम सब हिन्दुस्तानी हैं, जय हिन्द हमारा नारा है।

नेहरू, इन्द्रा, लाल बहादुर का होगा सपना साकार
जाओ एकता की ख़ातिर हम, कर दें अपनी जान निसार।
बापू जी ने हाथ बढ़ाकर हमको आज पुकारा है
हम सब हिन्दुस्तानी हैं, जय हिन्द हमारा नारा है।

सच्चा हिन्दुस्तानी

भारत के हर एक ज़र्रे की अपनी अलग कहानी है
इसका हर इक रहने वाला सच्चा हिन्दुस्तानी है।

अलग-अलग है खान पान और वस्त्रों में कब समता है ?
लेकिन सबकी ख़ातिर भारत माँ के दिल में ममता है
विभिन्नता में यही एकता इसकी एक निशानी है
इसका हर इक रहने वाला सच्चा हिन्दुस्तानी है।

कितनी भाषाएँ इसमें हैं लेकिन भाव समान मिले
एक छत्र भारत का सबके मन में इक अरमान मिले
देश प्रेम की सबके ख़ूँ में हरदम एक रवानी है
इसका हर इक रहने वाला सच्चा हिन्दुस्तानी है।

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम सबमें एक भावना है
सब मिलजुल कर रहें विश्व में अपनी यही कामना है
हो अखण्ड इसकी अखण्डता सबने मन में ठानी है
इसका हर इक रहने वाला सच्चा हिन्दुस्तानी है।

हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई सब मिलजुल कर रहते हैं
सब मिलजुल कर हँसते हैं और मिलजुल करग़म सहते हैं
रक्षक इसके ईसा, नानक, ख़्वाजा और भवानी है
इसका हर इक रहने वाला सच्चा हिन्दुस्तानी है।

आओ अब सब मिट जाने की इसपे, क़समें खाएँ हम
नीति हरिक अलगाववाद की दिल से दूर भगाएँ हम
प्यार की सीमाओं में हमको दुनिया नई बसानी है।
इसका हर इक रहने वाला सच्चा हिन्दुस्तानी है।

इन्सान का मंदिर

न मस्जिद चाहिए हमको न ये भगवान का मन्दिर
बनाओ बीच में दोनों के इक इंसान का मंदिर।

शिवाले, मस्जिदो-गिरजा, वजूद अपना मिटा बैठे
पनपता हर तरफ देखा फ़क़त शैतान का मंदिर।

यहाँ बनकर जो आका आएँगे मज़हब के ठेकेदार
बचा पाएँगे कैसे बोलिए ईमान का मंदिर।

तक़ाज़ा वक्त का मज़हब के ठेकेदार सब सुनलें
बने मस्जिद कन्हैया की बने रहमान का मंदिर।

सभी का एक ईश्वर है 'मयंक' इसको भी मानेंगे
ग़रीबों के लिए गर खुल सके धनवान का मंदिर।

आह्वान

स्वप्न सबके सजाते चलो साथियों
सबको हँसते हँसाते चलो साथियों।

ठोकरें कोई खाए नहीं राह में
दीप पग पग जलाते चलो साथियों।

एकता प्रेम सच्चाई की ताल पर
प्यार के गीत गाते चलो साथियों।

लाख तूफ़ान आएँ ग़मों के मगर
उनमें भी मुस्कुराते चलो साथियों।

ग़फ़लतों में जो सोए हुए हैं उन्हें
नींद से अब जगाते चलो साथियों।

सबसे अच्छा है अपना ये हिन्दोस्ताँ
ये तराना सुनाते चलो साथियों।

नफ़रतों का न हो अब अँधेरा कहीं
शमए उलफ़त जलाते चलो साथियों।

आँख उठाए जो सरहद पे दुश्मन कोई
होश उसके उड़ाते चलो साथियों।

प्रेम से जो मिले उसकी ख़ातिर सदा
अपनी आँखें बिछाते चलो साथियों।

मेरा दिल क़ुर्बान

नमन है उस धरती को जिसका नाम है हिन्दुस्तान
उसपे मेरा दिल क़ुर्बान, उसपे मेरा दिल क़ुर्बान।

जो मिट्टी मेहनत से निस दिन सब की झोली भरती
राजा रंक सभी का देखो लालन पालन करती।
जिसमें सब मिलकर रहते हैं निर्धन और धनवान
उस पे मेरा दिल क़ुर्बान, उस पे मेरा दिल क़ुर्बान।

जिसकी गाथा गाते गिरिजा, मस्जिद और शिवालय
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सब जिसके मतवाले
जहाँ पढ़ें सब मिलकर बाईबिल गीता और क़ुरआन
उस पे मेरा दिल क़ुर्बान, उस पे मेरा दिल क़ुर्बान।

अलग-अलग हैं वेष सभी के अलग-अलग है भाषा
लेकिन इस पर मर मिटने की सबकी है अभिलाषा
रहा एकता विभिन्नता में जिसका है ईमान
उस पे मेरा दिल क़ुर्बान, उस पे मेरा दिल क़ुर्बान।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई रहते हैं सब जिसमें
मिल जुलकर हँसते गाते हैं गम सहते हैं इसमें
जिसकी रक्षा करते ईसा कृष्ण गुरु, रहमान
उस पे मेरा दिल क़ुर्बान, उस पे मेरा दिल क़ुर्बान।

भारत माँ सबकी माता है ममता इसकी भारी
इसके चरणों में अर्पित है हर इक ख़ुशी हमारी
जिसकी पूजा जग करता है, सुन 'मयंक' नादान।
उस पे मेरा दिल क़ुर्बान, उस पे मेरा दिल क़ुर्बान।

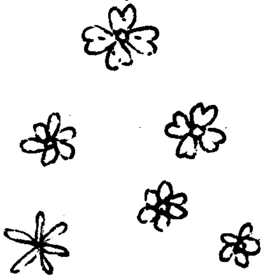

सुमन चढ़ाएँ

समझ नहीं आता है बापू कैसे हम तेरे गुण गाएँ
याद करें निसदिन हम तुझको और श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ।

हुआ असत्य सत्य पर भारी सच्चाई भयभीत हो रही
भाव अहिंसा का हारा है और हिंसा की जीत हो रही
तिमिर स्वार्थ का गहन हुआ है कैसे प्यार के दीप जलाऐं
समझ नहीं आता है बापू कैसे हम तेरे गुण गाएँ
याद करें निस दिन हम तुझको और श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ।

चोरी भ्रष्टाचार बढ़े हैं, रिश्वत का बाज़ार भरा है
सबके दिल में खोटापन है, कोई भी तो नहीं खरा है
तुम इक बार जन्म फिर ले लो, तो हम मन की बात बताएँ
समझ नहीं आता है बापू केसे हम तेरे गुण गाएँ
याद करें निस दिन हम तुझको और श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ।

देश भक्तिका नाम नहीं है बजा रहे सब अपनी ढपली पता
नहीं लगता है बापू कौन है असली कौन है नकली
राष्ट्र एकता के भावों को ऐसे में कैसे अपनाएँ
समझ नहीं आता है बापू कैसे हम तेरे गुण गाएँ
याद करें निस दिन हम तुझको और श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ।

इंगलिश हिन्दी पर है भारी, भूले सब बुनियादी शिक्षा
शिक्षित को रोज़ी नहीं मिलती पढ़े लिखे सब खीचें रिक्शा
क्या भविष्य होगा भारत का ऐसे में कैसे बतलाएँ
समझ नहीं आता है बापू कैसे हम तेरे गुण गाएँ
याद करें निस दिन हम तुझको और श्रद्धाके सुमन चढ़ाएँ।

वतन- जाँ से प्यारा

ऐ मेरे भारत वतन तू जाँ से प्यारा है मुझे
ऐ हसीं प्यारे चमन तू जाँ से प्यारा है मुझे।

क्या करूँ तारीफ़ तेरी बस यही है आरज़ू
हर जनम में हो मिलन तू जाँ से प्यारा है मुझे।

तेरी सरहद पर न कोई आँख उठा पाए कभी
मैं करूँगा ये जतन तू जाँ से प्यारा है मुझे।

बस तेरे ही तज़किरे हर सिम्त हों प्यारे वतन
अन्जुमन दर अन्जुमन, तू जाँ से प्यारा है मुझे।

गीत तेरे प्यार के दिन रात गाते हैं यहाँ
ये जमीं और ये गगन तू जाँ से प्यारा है मुझे।

मैं लुटा दूँगा तेरी ख़ातिर ये अपनी जान भी
देता हूँ मैं ये वचन तू जाँ से प्यारा है मुझे।

तू हमारा धर्म ईमाँ तू ख़ुदा भगवान है
मैं करूँ तुझको नमन तू जाँ से प्यारा है मुझे।

है सभी की आरज़ू तुझ पर फ़िदा हों जानो-तन
है यही सबकी लगन तू जाँ से प्यारा है मुझे।

वृक्षा रोपण

भारत माँ का रूप सजाओ
आओ आओ वृक्ष लगाओ ।

पेड़ों की है अद्भुत माया
फल देते और देते छाया ।
इन्हें काट मत पाप कमाओ
आओ आओ वृक्ष लगाओ ।

ये सूखे से हमें बचाते
झर झर झर पानी बरसाते ।
मरुस्थली को स्वर्ग बनाओ
आओ आओ वृक्ष लगाओ ।

जहाँ सुरक्षित होते हैं वन
वहीं पे लगता सुन्दर जीवन ।
सुन्दर जीवन को अपनाओ
आओ आओ वृक्ष लगीओ ।

वृक्षारोपण रब की पूजा
इससे बढ़कर काम न दूजा।
राष्ट्र नीति मत कभी भुलाओ
आओ आओ वृक्ष लगाओ।

हर दरवाजे वृक्ष लगाएँ
छोटे पौधे वृक्ष बनाएँ।
नष्ट न हों तुम इन्हें बचाओ
आओ आओ वृक्ष लगाओ।

हिन्द का बाँकपन

ख़ूबसूरत जो अपना वतन है
ख़ुशबुओं से भरा इक चमन है

देवताओं की धरती है भारत
इस वतन को हमारा नमन है।

इस वतन की हिफ़ाज़त की ख़ातिर
हमने बाँधा ये सर पे कफ़न है।

अम्न के सब पुजारी हैं, इसमें
बस ख़ुलूसो वफ़ा का चलन है।

इसपे .कुर्बां हुए, उनकी ख़ातिर
भीगा भीगा सा हर इक नयन है।

ऐ 'मयंक' इस पे क़ुर्बान हो जा
क्या हसीं हिन्द का बाँकपन है।

मेरा सलाम

जिनकी क़ुर्बानियों से है भारत का नाम
उन शहीदों को मेरा सलाम।

हर ख़ुशी छोड़कर जो वतन के लिए
जान भी अपनी देने को तैयार थे
देख उसको ग़ुलामी में रोते थे जो
जो कि अपनी गुलामी से बेदार थे
जिनकी क़ब्र और समाधी बनी पुण्य धाम।
उन शहीदों को मेरा सलाम।

जो कि चोला बसंती पहनते हुए
मर गए मिट गए थे वतन के लिए
जो कफन में लिपटकर रहे खुश सदा
और जो मिट गए थे चमन के लिए
जो वतन के लिए कर गए नेक काम।
उन शहीदों को मेरा सलाम।

नाम से जिनके दुश्मन परेशान था
देश आजाद हो जिनका अरमान था
चूम फाँसी के फंदे को खुश जो हुए
हिन्द जिनके लिए राम रहमान था
कुछ भी आराम जिनके लिए था हराम।
उन शहीदों को मेरा सलाम।

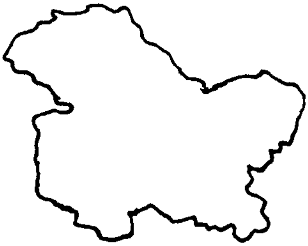

कश्मीर

बसा हुआ है जो प्रदेश सुन्दर झेलम के तीर
वो है जम्मू और कश्मीर, वो है जम्मू और कश्मीर।

छटा देखने लोग हज़ारों आते हैं हर साल
कुदरत के सौंदर्य से करते ख़ुद को मालामाल
जिसका सुन्दर सौरभ सबकी हर लेता है पीर
वो है जम्मू और कश्मीर, वो है जम्मू और कश्मीर।

उच्च शिखर पर जन्नत जैसा लगता श्री नगर
छम्ब लेह लद्दाख हैं इसके सुन्दर सभी शहर
जिसकी डल का सुन्दर लगता प्यारा अनुपम नीर
वो है जम्मू और कश्मीर, वो है जम्मू और कश्मीर।

सब धर्मों में प्रेम रहे, ये है इसका विश्वास
वीर बाँकुरों ने लिक्खा है इसका ये इतिहास
दुश्मन हार हार के भागा, चमकी जब शमशीर
वो है जम्मू और कश्मीर, वो है जम्मू और कश्मीर।

श्रद्धा सुमन

जन जन में है कीर्ति तुम्हारी, जैसे ख़ुशबू गुलशन में
बसी हुई हो आज भी इन्द्रा तुम हर दिल की धड़कन में।

प्रजातंत्र की रक्षा का जो बीड़ा तुमने उठाया था
उसके सिवा कोई और मक़सद था न तुम्हारे जीवन में।

ओ भारत की कर्णधार इन्द्रा तू सब की नेता थी
सबसे सुन्दर फूल तू ही थी भारत के इस उपवन में।

देकर के कुर्बानी जाँ की ख़ूब अमरता पाई है
याद बसी है आज भी तेरी इस भारत के जन जन में।

ये '**मयंक**' तेरी समाधि पर फूल चढ़ाने आया है
श्रद्धा सुमन सम आँसू लेकर आज ये अपने नयनन में।

मादरे हिन्द तुझको सलाम

मादरे हिन्द पे, सुबहो शाम,
अस्सलाम, अस्सलाम, अस्सलाम।

ताक़यामत चमकता रहे
तेरा नाम तेरा नाम तेरा नाम।

बस तेरा गीत गाए मेरा
हर कलाम हर कलाम हर कलाम।

अम्न का तूने सबको दिया
इक पयाम इक पयाम इक पयाम।

एकता का पिए हर कोई
एक जाम एक जाम एक जाम।

कोई अल्लाह पुकारे, कोई
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम।

आज आराम सबके लिए
है हराम है हराम है हराम।

तेरी मिट्टी में ही है **'मयंक'**
चारों धाम चारों धाम चारों धाम।

मेरा हिन्दोस्ताँ

दो जहाँ में सबसे सुन्दर है मेरा हिन्दोस्ताँ
प्रेम और अख़्लाक़ का घर है मेरा हिन्दोस्ताँ।

ग़फ़लतों में जो जहाँ डूबा हुआ है देखिए
उस जहाँ का एक रहबर है मेरा हिन्दोस्ताँ।

ग़ैर मुल्कों के अदीबों को भी जिसपे नाज़ है
इल्म का ऐसा समन्दर है मेरा हिन्दोस्ताँ।

एहले दुनिया को जो, उल्फ़त का सबक़ देता रहा
अम्न का इक ऐसा पैकर है मेरा हिन्दोस्ताँ।

मछलियाँ छोटी बड़ी मिलकर रहें जिसमें **'मयंक'**
प्यार का ऐसा सरोबर है मेरा हिन्दोस्ताँ।

भारत का बंगाल

जो साहित्य कला से सबको करता रहा निहाल
वो है भारत का बंगाल, वो है हम सबका बंगाल।

सबसे पहले जिस धरती पर सूर्य सदा उगता है
कुदरत का सौंदर्य वहीं पर अनुपमतम मिलता है।
पूरब में जो रहा सदा, बनकर भारत की ढाल
वो है भारत का बंगाल, वो है हम सब का बंगाल।

शरत और टैगोर ने जिसको राह नई दिखलाई
प्रिय सुभाष ने देशप्रेम की उज्ज्वल जोत जलाई।
जो साहित्य कला की पूँजी से है मालामाल
वो है भारत का बंगाल, वो है हम सबका बंगाल।

जिसने कभी न झुकना सीखा निज वैरी के आगे
आक्रान्ता जो भी आए, वो इससे डरकर भागे।
जहाँ शहीदों ने भारत का किया उच्चतम भाल
वो है भारत का बंगाल दो है हम सब का बंगाल।

हिमाला

ऊँची ऊँची चोटी वाला पर्वतराज हिमाला है
उत्तर में भारत का प्रहरी, हम सब का रखवाला है ।

अटल खड़ा है, इसने जग में सीखा नहीं कभी झुकना
कहता है आओ नभ छूलें तुम्हें नहीं है अब रुकना ।
इस पर्वत पर रहता भोले शंकर दीन दयाला है
ऊँची ऊँची चोटी वाला पर्वतराज हिमाला है ।

काश्मीर सा सुन्दर अनुपम स्वर्ग इसी पर मिलता है
जिसके हर गुलशनमें गुन्चा गुन्चा हँसकर खिलता है ।
बस इक बार जो देखे इसको, हो जाता मतवाला है
ऊँची ऊँची चोटी वाला पर्वत राज हिमाला है ।

छम्ब लेह लद्दाख सरीखे शहर बसे जिसमें प्यारे
सरहद पर जय हिन्द के नारे गूँजा करते हैं न्यारे ।
वीर है जिसका बच्चा-बच्चा सुन्दर हर इक बाला है
ऊँची ऊँची चोटी वाला पर्वतराज हिमाला है ।

सुन्दर स्वच्छ मनोहर अनुपम झेलम का बहता है नीर
श्री नगर सा शहर मनोहर बसा हुआ है जिसके तीर ।
स्वर्ग से बढ़कर जिसका प्यारा अनुपम रूप निराला है
ऊँची ऊँची चोटी वाला पर्वत राज हिमाला है ।

वतन की राह

आज वतन की राह में आए ज़ख़्म तो उसको आने दो
शिददते-दर्द अगर तड़पाए, तो उसको तड़पाने दो।

मेरे इस छोटे से दिल में, हिन्द समाया है सारा
क़ल्बो जिगर में ऐसा कोई, इक एहसास जगाने दो।

गोखले, गाँधा, नेहरू, इन्द्रा की तरहा क़ुर्बां होकर
इस धरती को फिर से कोई, चन्दर, भगत उगाने दो।

हमको शहीदों ने क़ुर्बानी, देकर इज़्ज़त बख़्शी है
उनके पाक मज़ारों पर अब, हमको शीश झुकाने दो।

एक हैं हम सब, एक है भारत, एक हमारा झडा है
आज 'मयंक' ये प्यारा नारा हम सबको दोहराने दो।

हिन्द ही रहमान है

अपने हिन्दुस्तान की कितनी निराली शान है
इस जहाँ में सब से बढ़कर अपना हिन्दुस्तान है ।

धो रहा है पाँव सागर इस वतन के प्यार से
दे रहा आशीष हिमगिर स्नेह से मनुहार से ।
जज़्ब-ए-अम्नो अमाँ पर हिन्द का ईमान है
इस जहाँ में सब से बढ़कर अपना हिन्दुस्तान है ।

लाल, मोती और जवाहर इसपें कुर्बां हो गए
यूँ भगतसिंह और चन्दर इसपें कुर्बां हो गए
ये सदा फूले फले अपना यही अरमान है
इस जहाँ में सब से बढ़कर अपना हिन्दुस्तान है ।

अर्श पर जब तक रहे इक भी सितारा दोस्तो
तब तलक भारत रहे क़ाइम हमारा दोस्तो
हिन्द ही रहमान अपना, हिन्द ही भगवान है
इस जहाँ में सब से बढ़कर अपना हिन्दुस्तान है ।

प्रियदर्शनी

इस वतन की शान थीं प्रियदर्शनी
हिन्द का ईमान थीं प्रियदर्शनी।

एकता और अम्न की ख़ातिर सदा
देखिए क़ुर्बान थीं प्रियदर्शनी।

वो सदा सारे जहाँ की थीं अज़ीज़
इस जहाँ की जान थीं, प्रिय दर्शनी।

थी उन्हीं से अज़मते-हिन्दोस्ताँ
हिन्द का सम्मान थीं, प्रियदर्शनी।

दुश्मनों ने भी सदा चाहा इन्हें
इस क़दर बलवान थीं, प्रिय दर्शनी।

हाँ जवाहर और कमला की लली
सत्यनिष्ठ इंसान थीं, प्रियदर्शनी।

स्नेह की पूँजी लुटाई उम्र भर
हाँ बड़ी धनवान थीं, प्रियदर्शनी।

इल्म वालों की मसीहा थीं 'मयंक'
और गुणों की खान थीं, प्रियदर्शनी।

गौतम बुद्ध

सत्य अहिंसा भक्ति धर्म का जिसने दिया विधान
वो थे गौतम बुद्ध महान, वो थे गौतम बुद्ध महान।

धर्म नया इक सदाचार का दुनिया को सिखलाया
सत्य अहिंसा दया प्रेम का इक रस्ता दिखलाया।
धर्म ने जिनके सदा किया है जन जन का कल्यान
वो थे गौतम बुद्ध महान, वो थे गौतम बुद्ध महान।

कपिल वस्तु में शुद्धोधन घर जब लीनों अवतार
घर घर में शहनाई बाजी बँध गए वंदनवार।
बचपन से जो दीनदुखी पर देते थे, ख़ुद ध्यान
वो थे गौतम बुद्ध महान, वो थे गौतम बुद्ध महान।

नगर गया में बोधि वृक्ष नीचे तप ध्यान कियो
बोध हुआ जब सत्य ज्ञान का बुद्धा नाम लियो
ज्ञान ज्योति से आलोकित तब कीनो सकल जहान।
वो थे गौतम बुद्ध महान, वो थे गौतम बुद्ध महान।

बड़े बड़े सम्राटों ने जब बुद्ध धर्म अपनाया
दूर दूर तक परदेसों में बौद्ध धर्म पहुँचाया
वीर अशोक ने जिस विभूति का सदा किया सम्मान
वो थे गौतम बुद्ध महान, वो थे गौतम बुद्ध महान।

दुनिया में हर धर्म से ज्यादा जिसके अनुयायी हैं
लंका चीन में आज भी जिसकी बजती शहनाई हैं
तिब्बत बर्मा में भी होता है जिसका गुणगान
वो थे गौतम बुद्ध महान, वो थे गौतम बुद्ध महान ।

सारनाथ और बौद्ध गया सब जिसकी महिमा गाते
कपिलवस्तु साँची लुम्बिन वन जिनकी गाथा गाते
दृष्टि में जिसकी हर प्राणी था जग में एक समान
वो थे गौतम बुद्ध महान, वो थे गौतम बुद्ध महान ।

मेरा भारत देश

मधुर मनोरम छटा है जिसकी सुन्दर है परिवेश
वो है मेरा भारत देश, वो है मेरा भारत देश
जिसने मन में कभी न रक्खा द्वेष भाव और क्लेश
वो है मेरा भारत देश वो है मेरा भारत देश।

उत्तर में हिमराज है ऊँचा दक्षिण सागर गहरा
सबसे पहले इस धरती पर निकले सूर्य सुनहरा।
जहाँ अहिंसा देश प्रेम हैं बापू के आदेश
वो है मेरा भारत देश, वो है मेरा भारत देश।

ये वसुधा है कुटुम्ब हमारा अपना है विश्वास
सब स्वतंत्र हों इस धरती पर रहे न कोई दास।
प्रजातंत्र का जो देता है दुनिया को संदेश
वो है मेरा भारत देश, वो है मेरा भारत देश।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रहते जिसमें मिलकर
नानक कान्हा और मुहम्मद हैं जिसके पैग़म्बर।
जिसकी रक्षा करते हैं रब ईसा और अखिलेश
वो है मेरा भारत देश वो है मेरा भारत देश।

देवों की धरती है भारत देवों की है प्यारी
चारों धाम शिवाले मंदिर छटा बनाएँ न्यारी
जिसके कण कण में बसते हैं ब्रह्मा विष्णु महेश
वो है मेरा भारत देश, वो है मेरा भारत देश।

वीरों की धरती है भारत हर कोई इसको जाने
इसकी कला, काव्य-कौशल को हर कोई पहचाने।
जिसका ये इतिहास बताते हैं खँडहर अवशेष
वो है मेरा भारत देश, वो है मेरा भारत देश।

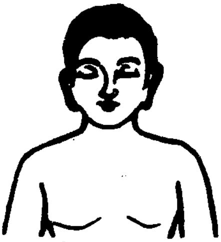

महावीर भगवान

सत्य अहिंसा दया प्रेम का दिया था जिसने जो ज्ञान
वो हैं महावीर भगवान, वो हैं महावीर भगवान।

सभी इन्द्रियों पर जय पाकर वो जैनेन्द्र कहाएँ
सदाचार की राह नई जो दुनिया को दिखलाएँ।
ज्ञान ज्योति का जो दुनिया को देके गए वरदान
वो हैं महावीर भगवान, वो हैं महावीर भगवान।

जिनके जन्म से धन्य हुआ अपना ये भारत देश
सादा जीवन उच्च विचारों को जो दें संदेश।
मोक्ष मिले हर इक प्राणी को जिनका लक्ष्य महान
वो हैं महावीर भगवान, वो हैं महावीर भगवान।

जन जन के मन नई चेतना जिनने जागृत कर दी
सबके दिल में जैन धर्म की नई रोशनी भर दी।
भारत के नर नारी करते हैं जिनका गुणगान
वो हैं महावीर भगवान, वो हैं महावीर भगवान।

हुए तीर्थंकर जितने भी महावीर है उत्तम
सरल सहज जो सब चल सकते, राह दिखाई मद्धम।
जाति पाँति का भेद गलत है, करते जो ऐलान
वो हैं महावीर भगवान, वो हैं महावीर भगवान।

जो जन पहने श्वेत वस्त्र वो कहलाते श्वेताम्बर
जो निरवस्त्र सदा रहते हैं उनको कहें दिगम्बर।
दिया है जिसने जैन धर्म को रूप ये आलीशान
वो हैं महावीर भगवान, वो हैं महावीर भगवान।

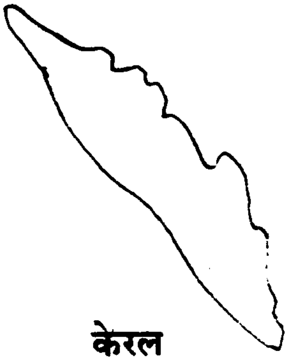

केरल

जहाँ शांति की बहती रहती हैं नदियाँ अविरल
वो है भारत का केरल वो है भारत का केरल।

हरे भरे हैं बाग बगीचे दौलत कुदरत की
रहे प्यार से, बात नहीं करता ये नफरत की।
साम्यवाद से जिसमें होती रहती है हलचल
वो है भारत का केरल वो है भारत का केरल।

इसमें शिक्षित लोगों का सबसे बढ़कर अनुपात
ज्ञान और विज्ञान के चर्चे होते हैं दिन रात।
बहें मनोरम नदियाँ जिसमें करती कल कल कल
वो है भारत का केरल वो है भारत का केरल।

पशुपालन और मछली पालन हैं इसके उद्योग
मेहनत कश और सच्चे सीधे इसके सारे लोग।
नौकाओं की क्रीड़ा का है जो सुन्दर स्थल
वो है भारत का केरल वो है भारत का केरल।

ऊँच नीच और जाति पाँति में रखे न ये विश्वास
सब धर्मों का संरक्षक है साक्षी है इतिहास।
शूरवीर हैं नर सब जिसके, बाला हैं कोमल
वो है भारत का केरल वो है भारत का केरल।

गुरु नानक देव

सब गुरुओं से बढ़कर जग में जिनका है सम्मान
वो हैं नानक देव महान, वो हैं नानक देव महान ।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख सभी दिन रात जिन्हें भजते हैं
ऐसे गुरु नानक सब पर निज वरदहस्त धरते हैं
जो दुनिया को सिखलाते हैं धर्म दया का ज्ञान
वो हैं नानक देव महान, वो हैं नानक महान ।

एक ही ईश्वर जिन्हें दिखाई दे काबा काशी में
वो कहते हैं हृदय रमाओ ऐसे अविनाशी में
सबद कीर्तन जिनका कर के लोग करें गुणगान
वो हैं नानक देव महान, वो हैं नानक देव महान ।

सच्चे मन से गुरु की सेवा में ही ईश्वर सेवा
जो पढ़ता है गुरु की बानी पाएगा वो मेवा ।
जिसकी खातिर एक हैं दोनों अल्लाह और भगवान
वो हैं नानक देव महान, वो हैं नानक देव महान ।

भटके हुए गुरु के बन्दो गुरु को सीस झुकाओ
भव सागर उतरोगे, नानक नाम जहाज बनाओ
गुरु ग्रंथ भण्डार गुणों का जो करते ऐलान
वो हैं नानक देव महान, वो हैं नानक देव महान ।

गुरु है बृह्मा, गुरु महेश्वर, गुरु ही है परमेश्वर
खुद को इनका भक्त बनाते नाम गुरु का लेकर
जो गुरु दयावंत सक्षम है जो है कृपानिधान
वो हैं नानक देव महान, वो हैं नानक देव महान।

वाहे गुरु की शरण में जाओ सब दुख दर्द मिटाओ
सत्य नाम की माला जप कर भवसागर तर जाओ
जो गुरु काटे पाप सभी के जो गुरु सुख की खान
वो हैं नानक देव महान, वो हैं नानक देव महान।

ज़िन्दगी है

किसी ने बात ये सच ही कही है
वतन की आबरू ही ज़िन्दगी हैं।

वतन की राह में हैं दिल जलाए
इसी की तो जहाँ में रोशनी है।

अजल से ये नज़रिया है हमारा
ग़ुलामी से सदा नफ़रत है।

शहीदों के लिए हैं सरनिगूँ सब
वतन के वास्ते हर ज़िन्दगी है।

वतन पर सिर कटाएगा वो कैसे
कि जिसके हौसलों में कुछ कमी है।

मुहब्बत जो दिखाती है जहाँ में
मेरे हिन्दोस्ताँ की रौशनी है।

'मयंक' आज़ाद है अब आस्माँ भी
ग़ुलामी की हरिक टूटी कड़ी है।

आवाज़ है

सारे भारत की यही आवाज़ है
हिन्द की धरती पे हमको नाज़ है।

मुझमें हर हिम्मत जगाता है यही
ये मेरा हमराज़ है दमसाज़ है।

देश की ख़ातिर लुटा देंगे ये जाँ
नौ जवानों की यही आवाज़ है।

सर से बाँधा है कफ़न इसके लिए
ये हक़ीक़त है, न कोई राज़ है।

देखिए ये शान मेरे हिन्द की
देश का हर नौजवाँ जाँबाज़ है।

बसा है तू

निराली शान है तेरी हरिक दिल में बसा है तू
मेरे भारत !मिरा ईश्वर है और मेरा खुदा है तू।

हिफाजत में तिरी हम जा लुटाएँगे सदा हँसकर
हमारी आरजू और जुस्तजू का मुद्दआ है तू।

ये हिन्दू, सिख, ईसाई और मुसलमाँ तुझपे कुर्बां हैं
हरिक मजहब से बढ़कर ऐ मेरे भारत बड़ा है तू।

तेरी तारीफ़ देवों ने फरिश्तों ने सुनाई है
रहे-अम्नो अमाँ का राहबर और रहनुमा है तू।

तेरी हर राह में बस जाँ लुटाने की तमन्ना है
कि तू कुरूक्षेत्र भी है और अपनी कर्बला है तू।

'मयंक' अब छोड़ कर तुझको कहाँ ताबिन्दगी पाए
अजल से इस जहाँ को रोशनी देता रहा है तू।

वतन प्यारे

तुझे दिल में सदा अपने बसाएँगे वतन प्यारे
कि तेरे ही तराने गुनगुनाएँगे वतन प्यारे।

फ़क़त तेरे लिए ये जान क्या ईमाँ भी हाजिर है
ज़रूरत हो तो हम सिर भी कटाएँगे वतन प्यारे।

तू हम सब की मुहब्बत है, शहीदों की अमानत है
तेरी ही दास्ताँ जग को सुनाएँगे वतन प्यारे।

चलेंगे नक़्शे-पा पर अपने बापू के सदा हम सब
अहिंसा पर सदा चलकर दिखाएँगे वतन प्यारे।

सदा ये परचमे- अम्नो- अमाँ ऊँचा रखेंगे हम
तिरंगे की ही अज़्मत को बढ़ाएँगे वतन प्यारे।

मिटा देंगे जहाँ से नफ़रतों का हर चलन इकदिन
फ़क़त इक प्यार का दीपक जलाएँगे वतन प्यारे।

'मयंक' अब आरज़ू ये है वतन के काम आ जाएँ
शहीदों में यूँ नाम अपना लिखाएँगे वतन प्यारे।

हिन्दोस्ताँ है

फ़रिश्तों ने किया जिसका बयाँ है
हज़ारों में ,मेरा हिन्दोस्ताँ है।

यही है आरज़ू और जुस्तजू भी
कहो दीगर कोई मक़सद कहाँ है ?

नहीं नफ़रत का कोई काम इसमें
मुहब्बत चारसू इसमे रवाँ है।

ये धरती शूरवीरों की है धरती
हसीं हर एक इसकी दास्ताँ है।

'मयंक' इस हिन्द से भी ख़ूबसूरत
जहाँ में और कोई गुलसिताँ है ?

उत्तम नारा है

'जय भारत जय हिन्द' जहाँ में जिसका उत्तम नारा है
उस न्यारे भारत की मिट्टी को किसने ललकारा है ?

वीर शहीदों की धरती ये, जाँबाज़ों की धरती है
दूर रहो दुनिया वालो गर जीवन तुमको प्यारा है।

गोया मज़हब अलग अलग हैं, लेकिन हम सब भाई हैं
रक्षक इसके मंदिर, मस्जिद, सिक्खों का गुरुद्वारा है।

विन्ध्य, हिमाला और सतपुड़ा इसके प्रहरी हैं सच्चे
गंगा, जमुना, कावेरी ने इसका रूप सँवारा है।

यारों के हम यार हैं लेकिन दुश्मन के हैं दुश्मन भी
कोई आँख उठाए इस पर हमको कहाँ गवारा है ?

हम तो **'मयंक'** हैं शांति पुजारी हमको हिंसा से नफ़रत
जो आतंक यहाँ फैलाए पापी है हत्यारा है।

हिन्दोस्ताँ

एक है धरती हमारी एक अपना आस्माँ
एक है अपना वतन और एक है हिन्दोस्ताँ।

क्या उजाड़ेंगी इसे अब नफरतों की आधियाँ
आसमाँ में इसके चमके प्यार की ही क़हक़शाँ।

हैं कई सूबे मगर इतिहास सबका एक है
एक है इसकी कहानी एक इसकी दास्ताँ।

मुस्लिमो हिन्दू सभी इसकी इबादत करते हैं
ईश का मंदिर भी है ये और ख़ुदा का आशियाँ।

अहले दुनिया की सदा ही रहनुमाई हमने की
इस हकीकत को सदा पहचानता है ये जहाँ।

संत तुलसीदास के रसख़ान के वारिस हैं हम
हम अदब के राहबर हैं अहले फ़न के क़द्रदाँ।

ऐ 'मयंक' इस हिन्द से बढ़कर कोई मक़सद नहीं
हिन्द पर ईमान क़ुर्बां हिन्द पर क़ुर्बान जाँ।

वीर सुभाष

आओ सुनाएँ तुमको क़हानी सुभाष की
आज़ादी ए वतन है निशानी सुभाष की ।

बचपन से ही वो हिन्द की ख़ातिर उदास थे
मिट जाओ हिन्द पर थे यही शब्द आपके

थी हिन्द पर निसार जवानी सुभाष की
आज़ादी-ए- वतन है निशानी सुभाष की ।

भारत के वो सपूत थे ऐसा ही था चलन
भारत रहे ग़ुलाम उन्हें था नहीं सहन
थी ख़ूँ में इक अजब ये रवानी सुभाष की
आज़ादी ए वतन है निशानी सुभाष की ।

आज़ाद हिन्द हो यही अरमाँ था आपका
इक देश प्रेम ही सदा इमाँ था आपका
मुश्किल है अब वो याद मिटानी सुभाष की
आज़ादी ए वतन है निशानी सुभाष की

बंगाल की वो आन था कितना दिलेर था
हिन्दोस्ताँ की शान था बब्बर वो शेर था
है ये **'मयंक'** क़ौम दिवानी सुभाष की
आज़ादि ए वतन है निशानी सुभाष की ।

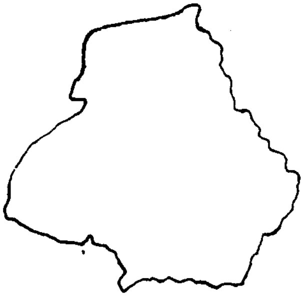

पञ्जाब हमारा

उत्तरा खण्ड में सबका प्यारा
है ये पंजाब प्यारा हमारा।

इसकी धरती उगलती है सोना
है ये पंजाब भारत का गहना।
ये भगतसिंह की गाता है गाथा
जिसको झुकना कभी भी न आया।
सूरमाओं ने जिसको सँवारा
है ये पंजाब प्यारा हमारा।

वीर रणजीतसिंह की कहानी
दे रही वीरता की निशानी
बच्चे बूढ़े के खूँ में भी इसने
देखिए इक जगा दी जवानी
वीरता ही है जिसको गवारा
ये है पंजाब प्यारा हमारा।

पूछिए भाँगड़ा की न बातें
कैसे कटती हैं टप्पों में रातें
बल्ले बल्ले की प्यारी सदाएँ
और हसीनों की नाज़ुक अदाएँ
प्यार से जिसने सबको पुकारा
है ये पंजाब प्यारा हमारा।

क्या हसीं है ये लोढ़ी का मंज़र
लेके आए ख़ुशी का समन्दर
वेष भूषा है रंगीन प्यारी
सबके मन पे है छाई ख़ुमारी
है हसीं जिसका मंज़र ख़ुदारा
है ये पंजाब प्यारा हमारा।

कह रहा बाग़ है जलियाँ वाला
मौत से सबका पड़ता है पाला
जो वतन के लिए जान देते
वो ही मरकर भी ज़िन्दा हैं रहते
जीत उसकी है जो जान हारा
है ये पंजाब प्यारा हमारा।

इस पे गुरुओं ने क़ुर्बानियाँ दी
जंगे आज़ादी में अपनी जाँ दी
हीर लैला औ-मजनूँ के क़िस्से
कह रहा है ये क्या क्या सभी से
ख़ूबसूरत है जिसका नज़ारा
है ये पंजाब प्यारा हमारा।

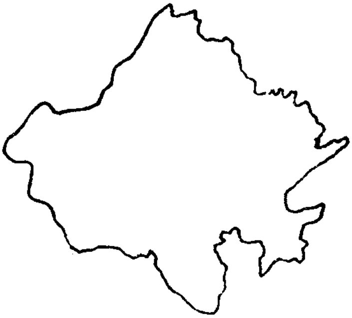

राजस्थान

जिसमें ख़ुशबू बसी हुई है, आन बान और शान की
वो धरती राजस्थान की, वो धरती राजस्थान की ।

अरावती पर्वत सा जिसका मस्तक प्यारा प्यारा है
माहि, चम्बल, गंग नहर ने जिसका रूप सँवारा है
मेहनत से जो बंजर खेतों में भी स्वर्ण उगाता है
मत पूछो कि उस प्रदेश का कितना हसीं नजारा है
औरों ने भी सच्चे मन से जिसकी कथा बखान की
वो धरती राजस्थान की वो धरती राजस्थान की ॥

जिसने झुकना कभी न सीखा वो गढ़ ही है चित्तौर
जितने भी गढ़ हैं दुनिया में उन का ये है सिरमौर
उदयपूर की सुन्दर झीलें, कोटा के गुलशन देखो
इतने सुन्दर हसीं नजारे तुमको कहाँ मिलेंगे और
इसके वासी गाथा गाते साँगा वीर महान की
वो धरती राजस्थान की वो धरती राजस्थान की

रणथम्भोर के उच्च दुर्ग में रहते थे जब राव-हमीर.
शरणागत की खातिर जिनने चमकाई अपनी शमशीर
इसको अपने दृढ़ निश्चय से झुका न पाया था कोई
कितने ही नादिर आए और कितने आए आलम गीर
जो धरती है चीतों की और शेरों के उद्यान की
वो धरती राजस्थान की, वो धरती राजस्थान की।

हर हर महादेव के जिसमें नारे गूँजें हैं प्यारे
जिसके वीरों की गाते हैं गाथाएँ मिलजुल सारे
वो केसरिया बाना पहने वीर बाँकुरे निकल गए
आजादी की बलिवेदी पर शीश चढ़ाने मतवाले
सतियों ने जिसमें जौहर कर अपनी जाँ कुर्बान की
वो धरती राजस्थान की, वो धरती राजस्थान की।

माँ अम्बे माँ केलादेवी की ये अनुपम धरती है
भक्ति भावना सब के मन में सब दारुण दुख हरती है
झोली खाली लेकर जो आते है माँ केला के द्वार
उनकी झोली भरती है माँ इच्छा पूरी करती है
जिस धरती पर अनुकम्पा है मोहन मदन महान की
वो धरती राजस्थान की, वो धरती राजस्थान की।

इन्साँ की बातें छोड़ो इसका पशु भी बलिदानी है
इसी लिए तो **'चेतक'** घोड़े की भी अमर कहानी है
शीश काट हाँडा रानी ने भेजा था पति को उपहार
कुर्बानी की बोलो इससे बढ़ कर कहाँ निशानी है ?
जहाँ बसी है कण कण में बस गाथाएँ बलिदान की
वो धरती राजस्थान की, वो धरती राजस्थान की।

सारे जग से न्यारा भारतवर्ष

तन मन धन से बढ़कर ये हम सबको प्यारा है
सारे जग से न्यारा भारतवर्ष हमारा है।

वीरों की गाथाएँ गाता है इसका इतिहास
सोने की चिड़िया था भारत सबको है एहसास।
दूध दही की नदियाँ इसमें हरदम बहती थीं
भारत के एश्वर्य की गाथा सबसे कहती थीं।
आज भी जिसमें उस मन्ज़र का हसीं नजारा है
सारे जग से न्यारा भारत वर्ष हमारा है।

हर्ष, अशोक और चन्द्रगुप्त ने जिसको प्यार दिया
गाँधी और सुभाष ने जिसपे जीवन वार दिया
लक्ष्मी, नाना, तात्या भी कुरबान हुए इस पर
भगतसिंह, सावरकर भी बलिदान हुए इस पर
वीर शहीदों ने ख़ूँ देकर जिसे सँवारा है
सारे जग से न्यारा भारतवर्ष हमारा है।

नानक ख़्वाजा साँई का आशीष रहा जिस पर
जहाँ ग्रन्थ गीता कुरआँ सब पढ़ते हैं मिलकर
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई इसके प्यारे हैं
सभी धर्म अपने इसकी आँखों के तारे हैं
एक है मंज़िल हर मज़हब की जिसका नारा है
सारे जग से न्यारा भारतवर्ष हमारा है

शोषण दुनिया में न किसी का हो, अरमान है
इसी त्रिदेशी नीति का तो जग में सम्मान है
हम वसुधा को कुटम्ब समझते और विस्तृत परिवार
रंग भेद को जो कोई माने उसको है धिक्कार
इसने सब साम्राज्यवादियों को ललकारा है
सारे जग से न्यारा भारतवर्ष हमारा है।

इसका ध्वज है एक तिरंगा, इसका एक विधान
मूलभूत, अधिकार हैं जिसमें, सबके एक समान
जहाँ एकता विभिनता में दिखलाई देती
जिससे शिक्षा शांति प्यार की ये दुनिया लेती
जो कि शहीदों की **'मयंक'** आँखों का तारा है
सारे जग से न्यारा भारत वर्ष हमारा है।

हिन्दुस्ताँ

सत्य अहिंसा देश प्रेम का घर है हिन्दुस्ताँ
दौरे हाज़िर में सच्चा रहबर है हिन्दुस्ताँ।

कई सभ्यताओं की नदियाँ जिसमें गिरती हैं
ऐसा गहरा एक महासागर है हिन्दुस्ताँ।

हमने खुद अपनी मेहनत से इसे सँवारा है
कब ग़ैरों की ताक़त पे निर्भर है हिन्दुस्ताँ।

क़ुदरत ने अपने हाथों से इसे सजाया है
मत पूछो कितना मेरा सुन्दर है हिन्दुस्ताँ।

दो जहान में इस 'मयंक' का दावा है यारो
चाँद सितारों से भी ये बढ़कर है हिन्दुस्ताँ।

वतन के लिए

जान कर देंगे क़ुर्बां वतन के लिए
है यही सबका अरमाँ वतन के लिए।

अपने भारत से बढ़कर न मज़हब कोई
छोड़ देंगे हर ईमाँ वतन के लिए।

ख़ुशबुओं से सराबोर हो अपना वतन
अब सजाओ गुलिस्ताँ वतन के लिए।

तुझको जन्नत मिलेगी ज़रूर एक दिन
देखले मिट के नादाँ वतन के लिए।

ऐ 'मयंक' आज क़ुर्बान है देखिए
ये जिगर, ये मेरी जाँ वतन के लिए।

चन्दन है

भारत की मिट्टी जो सोना चंदन है
उस पर न्योछावर अपना ये तन मन है ।

भारत की ख़ातिर जो लोग शहीद हुए
ऐसे सब इंसानों का अभिनंदन है ।

हम मर कर भी इससे दूर नहीं होंगे
जन्म जन्म का इससे अपना बंधन है ।

जिस माटी से बापू और नेहरू जन्मे
उस धरती को मेरा सौ सौ वंदन है ।

खुद कुदरत ने जिसका रूप सँवारा है
कितना सुन्दर मेरा यारो गुलशन है ।

है 'मयंक' रग रग में भारत की उल्फ़त
इससे वाबस्ता मेरी हर धड़कन है ।

कोई वतन

मेरे हिन्दुस्तान से बढ़कर नहीं कोई वतन
रंगो बू वाला है ये मेरा हसीं प्यारा चमन।

है यहाँ कश्मीर के दिलकश चमन और वादियाँ
क्या बताऊँ किस क़दर दिलकश है इसका बाँकपन।

इसको कितना भी मैं देखूँ तश्नगी बुझती नहीं
बाद मरने के भी पाओगे मेरे प्यासे नयन।

हम उसूलों के हैं पक्के साक्षी इतिहास है
अपने बैरी को भी इसने दी सदा बढ़कर शरन।

क्या पनप पाएगी नफरत ऐ **'मयंक'** इस हिन्द में
बस ख़ुलूसो-इश्क़ का देखा सदा इसमें चलन।

मध्य प्रदेश

जिसकी मिट्टी सबको देती प्यार भरा संदेश
वो है मेरा मध्य प्रदेश, वो है मेरा मध्य प्रदेश।

तालों में इक ताल है इसका ताल एक भूपाल
यहाँ राजधानी के चारों ओर मिलेंगे ताल
जिसकी सौंधी-सौंधी मिट्टी, सुन्दर है परिवेश
वो है मेरा मध्य प्रदेश, वो है मेरा मध्य प्रदेश।

खजुराहो सी कला कहाँ धरती पे देती दिखाई
साँची के स्तूप ने सबको अम्न की राह बताई।
जिसमें रहते हैं सन्यासी ज्ञानी और दरवेश।
वो है मेरा मध्य प्रदेश, वो है मेरा मध्य प्रदेश।

बस्तर सा सौन्दर्य प्रकृति का कहाँ मिलेगा दूजा
महाकाल की जिसमें निसदिन होती रहती पूजा
जिसकी रक्षा करते शंकर भोलेनाथ महेश
वो है मेरा मध्यप्रदेश, वो है मेरा मध्य प्रदेश।

प्रिय मालवा की दुनिया में सबसे सुन्दर रातें
इसके उन्नत उद्योगों की मत पूछो कुछ बातें
जहाँ दुर्ग भोपाल दे रहा मेहनत का आदेश
वो है मेरा मध्यप्रदेश, वो है मेरा मध्यप्रदेश।

तिरंगा प्यारा

उच्च गगन को छूने वाला मस्त तिरंगा प्यारा है
भारत माँ के सब वीरों की ये आँखों का तारा है

पावन दिन पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालीस जब आया था
लाल किले पर चाचा नेहरू ने इसको फहराया था
देश हुआ आजाद सभी ने गीत ख़ुशी का गाया था
और गगन में ऊँचा ऊँचा ये झंडा लहराया था।
इसकी ख़ातिर जाँ दे देना ही बस ध्येय हमारा है
उच्च गगन को छूने वाला मस्त तिरंगा प्यारा है।

श्वेत रंग में इस झंडे के शांति भावना मिलती है
केसरिया में बलिदानों की भीष्म कामना मिलती है।
इसके दर्शन ही से सब को नई चेतना मिलती है
देश प्रेम की सबके दिल को एक धारणा मिलती है
भूले से अपमान हो इसका, हमको कहाँ गवारा है
उच्च गगन को छूने वाला मस्त तिरंगा प्यारा है।

इसकी ख़ातिर जाने कितने वीरों ने क़ुर्बानी दी
देश प्रेम की बच्चे-बच्चे को इक नई कहानी दी
खून पिया, ख़ुशियाँ दे डालीं अपनी नई जवानी दी
क़ुर्बानी की भारत माँ को अनुपम एक निशानी दी
ये लहराता रहे गगन में यही हमारा नारा है
उच्च गगन को छूने वाला मस्त तिरंगा प्यारा है।

नेताजी

भारत माँ की शान हमारे नेता जी
तुम पर दिल क़ुर्बान हमारे नेता जी।
ख़ून के बदले आज़ादी तुमको दूँगा
करके गए ऐलान हमारे नेता जी।

धूल झोंक कर अंग्रेज़ों की आँखों में
हो गए अंतरधान हमारे नेता जी।
भारत में आज़ादी हो ख़ुशहाली हो
रखते थे अरमान हमारे नेता जी।

भारत माता की आज़ादी की ख़ातिर
हो गए ख़ुद क़ुर्बान हमारे नेता जी।
एक बार फिर आकर दर्शन दे जाओ
है सबका अरमान हमारे नेता जी।

देकर के आज़ाद हिन्द सेना हमको
बढ़ा गए सम्मान हमारे नेता जी।
नारा दे जय हिन्द तिरंगे झंडे को
बढ़ा गए तुम शान हमारे नेता जी।

अब न कभी पैदा होगा इस दुनिया में
तुम जैसा इंसान हमारे नेता जी।
यही आरज़ू है **'मयंक'** की बस इक बार
दे दें दर्शन दान हमारे नेता जी।

हिन्द को सजाएँगे

हिन्द पर ये दिलो जाँ लुटाएँगे हम
इस पे क़ुर्बान होकर दिखाएँगे हम।

ये वतन अपनी जान और ईमान है
गीत क़ौमी सदा गुनगुनाएँगे हम।

आँख इस पर उठाए जो कोई अगर
उसका नामो-निशाँ तक मिटाएँगे हम।

प्यार, इज़्ज़त, मुहब्बत से सच्चाई से
दिल के मसनद पे इसको बिठाएँगे हम।

ये तिरंगा अमर और ऊँचा रहे
ज़िन्दगी का ये मकसद बनाएँगे हम।

देश के प्यार से ही **'मयंक'** अब सदा
दिल कीमहफ़िल को हरदम सजाएँगे हम।

रहता है

ख़यालों में कहीं ईश्वर कहीं रहमान रहता है
मेरे दिल में मगर हर वक़्त हिन्दोस्तान रहता है।

मैं उस धरती पे सौ सौ जान से क़ुर्बान हूँ यारो
जहाँ हमराह गीता के सदा कुरआन रहता है।

मेरी नज़रों में वो सब देवताओं से भी बढ़कर हैं
वतन पर जाँ निसारी का जिन्हें अरमान रहता है।

जहाँ रक्खी है मेरे प्रिय कवि बच्चन की मधुशाला
वहीं कमरे में रक्खा मीर का दीवान रहता है।

यहाँ हिन्दू मुसलमाँ सिक्ख ईसाई तो मिलते हैं
मुझे वो जगह बतला दो जहाँ इंसान रहता है।

कहीं बसता है दिल में मोहनी सूरत कन्हैया की
तसव्वुर में किसी के दीन का सुल्तान रहता है।

नाम	:	कृष्ण कुमार सिंह
तख़ल्लुस	:	'मयंक' अकबराबादी
जन्म तिथि	:	४ सिमम्बर १९४४
पता	:	बी. एच-१९३,एच.आई.जी. केदारनगरं, शाहगंज, आगरा

विद्वानों की दृष्टि में मयंक साहब

कृष्ण कुमार सिंह मयंक ने उर्दू शाइरी में एतबार और किसी हद तक वक़ार भी हासिल कर लिया है ।वो बेहद ज़ूदगो हैं, अल्फ़ाज़ के इन्तख़ाब से ख़यालात की गिरफ़्त तक उनकी सन्नाई और मश्शाक़ी उनके कलाम से ज़ाहिर होती है ।

.फसीह अकमल

मयंक जी एक बड़े उहदे पर होते हुए भी बहुत सरल और सोम्य हैं । मयंक जी ने हर रंग में लिखा है और लिखते ही चले जा रहे हैं । इनके लिखे लोक गीत, नज़्में, ग़ज़लें और राष्ट्रगीत हमारे पथ प्रदर्शक हैं ।

शंकर-शम्भू

मयंक साहब जो कुछ अपनी खुली आँख से देखते हैं उन्हें अपने शाइराना जज़्बों में समोकर ग़ज़ल की ज़बान दे देते हैं । उनकी ज़बान न तो फ़ारसी आमेज़ उर्दू है न संस्कृत आमेज़ हिन्दी, बल्कि एक सीधी सादी और आम बोलचाल की ज़बान है जो दिल से निकलती है और दिल में उतरती है ।

वाली आसी

मुल्क के बिगड़े और बदले हुए हालात में भी कुछ ऐसी शख़्सियतें हैं जो क़ौम के लिए फ़िक्र मन्द हैं । अपनी आवाज़ और कलाम के ज़रिए अपने इस फ़र्ज़े मन्सबी को अन्जाम देने में कोताही नहीं करते और ख़ुश दिली से इस काम में लगे हुए हैं । ऐसे ही लोगों में एक शख़्सियत है, जो चाँद की मानिन्द अपनी चाँदनी बिखेर रही है । मेरी मुराद जनाबे कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक' अकबराबादी से है जिनका नाम भी रोशन है और जो उफ़क़े शाइरी पर अपने कलाम के ज़रिए चाँद की तरह अपनी चाँदनी बिखेर रहे हैं ।

आज़ाद इरमी

मयंक साहब की शाइरी देशप्रेम और एकता की जीवन्त मिसाल है ।

दी स्टेटमेण्टस् (अख़बार)